चकमक

अप्रैल, 1995

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00



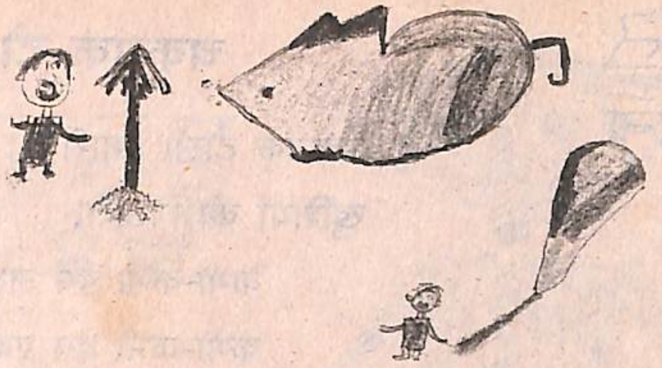
ताल-तलैया



मधु मौर्य, हरदा, होशंगाबाद, म.प्र.



शिशिर चौहान, तीसरी, बालाघाट, म.प्र.



गुलनाज़, उज्जैन, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-10 अंक 10 अप्रैल, 1995

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पांच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक ख़र्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

काग़ज : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/25,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462016

(म. प्र.)

फोन : 563380

116 वें अंक में ....

आवरण परिचय

भोपाल शहर और तालाब। बाई ओर बड़े तालाब का किनारा दिख रहा है। शहर के बीच ताज-उल-मसजिद और उससे लगी हुई तीन तालाबों की शृंखला। छायाचित्र आर.सी.साहू के सौजन्य से।

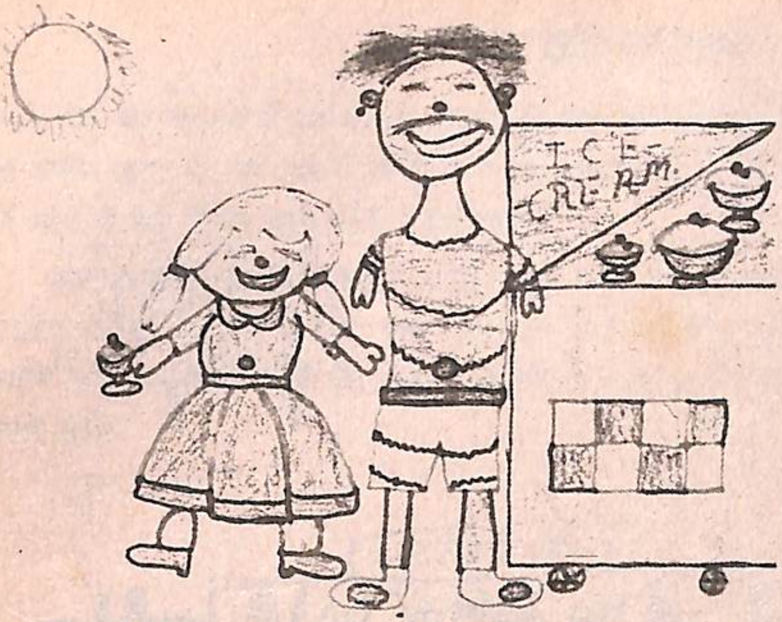
एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चकमक टोली

चकमक टोली हमारी
खुशियों की पिटारी।
कभी-कभी हम लड़ते-झगड़ते
कभी-कभी हम एकजुट हो जाते।
कभी-कभी हम मिलकर गाते
मस्ती करते धूम मचाते।
टोली हमारी दुश्मन
के लिए बन्दूक की गोली।
छोटी-मोटी बात को हम
मिलकर सुलझा लेते हैं।
टोली हमारी सबको
लगती है प्यारी।
चकमक टोली हमारी
खुशियों की पिटारी।
कभी-कभी हम लड़ते-झगड़ते
कभी-कभी हम एकजुट हो जाते।
झूठी बात करें न हम किसी से
सच्ची बात करें हम सबसे।
सब करते हैं हमारी बढ़ाई
हर गली में चकमक की बात बताई।
चकमक टोली हमारी
खुशियों की पिटारी।
कभी-कभी हम लड़ते-झगड़ते
कभी-कभी हम एकजुट हो जाते।

❑ प्रमोद साकल्ले, भादूगाँव, टिमरनी, म.प्र.

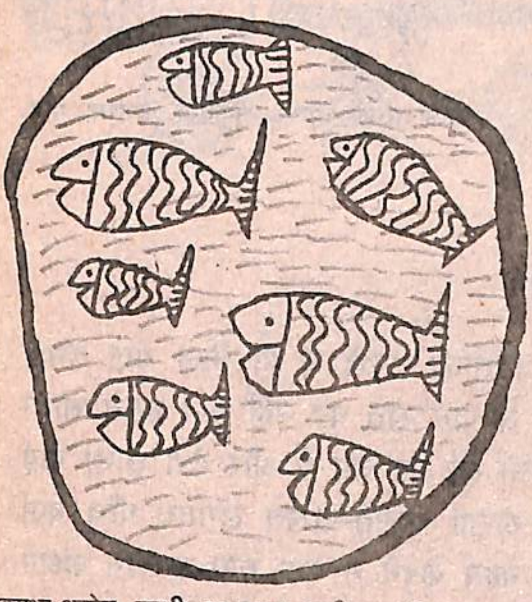
मेरा पन्ना



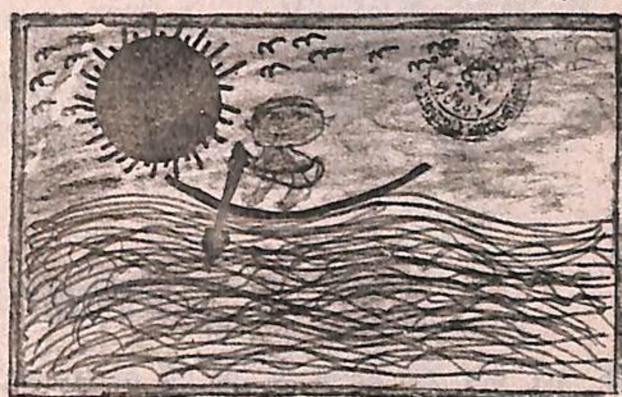
प्रियंका सरवाना, चौथी, पंचकूला, हरियाणा



विपत भारती गोस्वामी, हिरनखेड़ा,
होशंगाबाद, म.प्र.



वसुधा आत्रेय, दूसरी, समालखा, पानीपत, हरियाणा



शैलेन्द्र देवांगन, आठवीं, कोण्डागाँव, बस्तर, म.प्र.

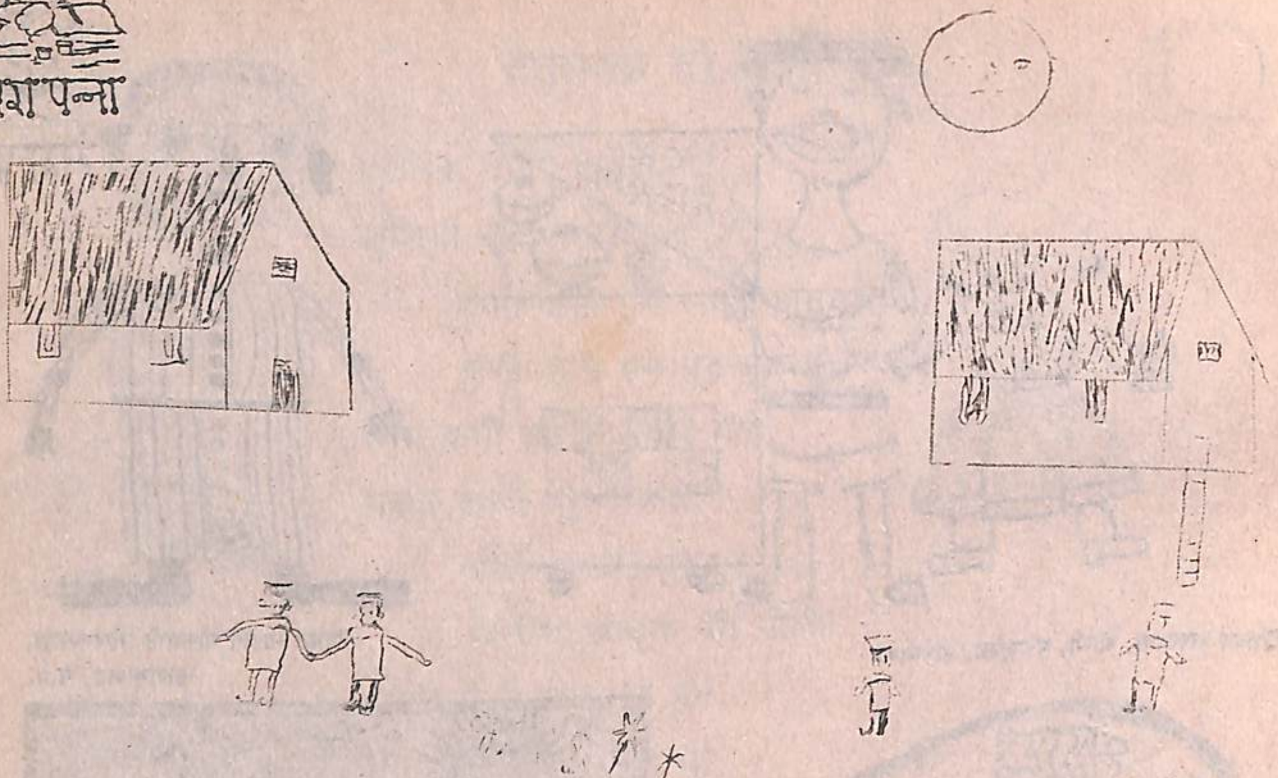


पद्मा गौड़, सातवीं, देवास, म.प्र.



योगेश शर्मा, छठवीं, बड़नगर, उज्जैन, म.प्र.





लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, सांडिया, पिपरिया, म.प्र.

जंगली सूअर

एक बार जब हम स्कूल से आ रहे थे तो हमें हमारे पिताजी रास्ते में ही मिल गए। हमारे पिताजी ने कहा कि आज दोनों भाई खेत पर आ जाना। तो हम खेत पर नहीं गए। हमने सोचा कि आज हम खेत पर नहीं जाएँगे और उस रोज़ हम दोनों घर पर रहे। मैं और मेरा छोटा भाई सुरेश और अन्य मित्रों ने मिलकर लुकाछिपी का खेल खेला। खेलते-खेलते लगभग पाँच बज गए। हमें अपने घर का काम भी करना था इसलिए हम काम करने में लग गए। लगभग संध्या हो चुकी थी और हमारे पिताजी खेत पर से आ गए। मैं और मेरे छोटे भाई सुरेश को बहुत डाँटा। उस रोज़ से मैं और मेरा छोटा भाई रोज़ खेत पर जाने लगे।

दूसरे रोज़ जब हम खेत पर जा रहे थे तो रास्ते में हमें एक जंगली सूअर मिला। हम नहीं जानते थे कि यह जंगली सूअर है। सूअर की दो लम्बी-लम्बी खीसें थीं। वह हमारे पीछे पड़ गया। मैं और सुरेश बहुत भागे। भागते-भागते थक गए इसलिए हम दोनों भाई एक गहरी झाड़ी में लुक गए। वह जंगली सूअर वहाँ से भागता हुआ निकल गया। उसके बाद हम दोनों भाई खेत पर गए। हमारे पिताजी को सारी बात बता दी। हमारे पिताजी ने कहा, 'अरे वह जंगली सूअर था।'

❑ रामनाथ बिलारे, चौकड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.

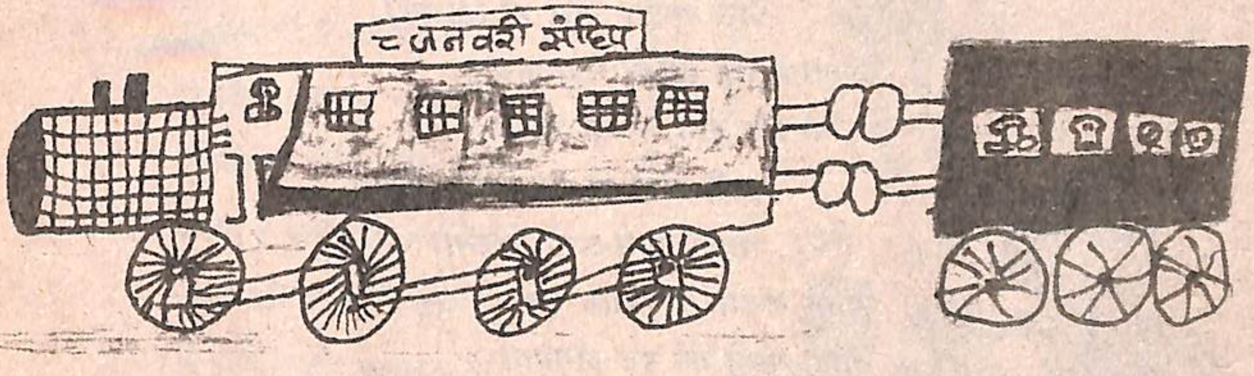


राख का टोटका

हमारे घर का कचरा मैं ही फेंकने जाता हूँ। एक दिन मैं डब्बे से कचरा फेंकने गया। वह डब्बा फूटा था तो उसमें से राख रास्ते भर गिरती गई। कचरा फेंकने के थोड़ी देर बाद मैं घर में आ गया और पढ़ने लगा।

सभी मोहल्ले वालों ने बाहर आकर उस राख को देखा। वे समझे कि कोई इस मोहल्ले पर टोटका करके गया है। मैंने भी उस राख को देखा तो मैंने कहा कि यह राख है। सुबह मैं कचरा फेंकने गया था तब यह गिरती गई। तो सभी ने मेरा बहुत मज़ाक उड़ाया और मुझे बहुत परेशान करने लगे।

❑ कृष्णपाल सिंह ठाकुर, तेरह वर्ष, धार, म.प्र.





संदीप पटेल, पाँचवीं, मसनगाँव, हरदा, म. प्र.

पिकनिक

हमारे पड़ोस में एक चाची रहती हैं। उनके एक लड़का है राजू। वह मेरा प्रिय मित्र है। एक दिन हम दोनों बिना पूछे घर से पिकनिक पर रवाना हो गए। हम दोनों साइकिलों पर सवार थे। बहुत दूर तक निकल आए और जब वापस लौट रहे थे तो रास्ते में हमारी साइकिल पंचर हो गई। और रात वहीं गुज़ारनी पड़ी। उधर चाची ने हर जगह पूछ डाला। राजू का कहीं पता नहीं चला। चाची बहुत उदास थीं। जब हम सबेरे लौटकर आए तो चाची बीमार थीं। फिर हमने सारी बात चाची को बताई। तो चाची ने हमें एक शर्त पर माफ़ कर दिया कि हम दोनों कभी बिना पूछे घर से नहीं जाएँगे।

❑ सुरेश बोहरा, गांधी, पाली, राजस्थान

लड़का एक अनोखा



आओ एक लड़के की बात सुनाएँ
उसके दो-दो रूप दिखाएँ
कभी तो है वो बहुत सयाना
भोलेपन में न उसके जाना।
पर जब उसे सूझे शैतानी
करता है बस अपनी मनमानी।
रोज़ उठे वो हँसते-हँसते
जैसे सुन्दर फूल हों खिलते।
रोज़ाना वह जल्दी नहाता-धोता
न वो बिगड़ता, न वो रोता।
कभी-कभी तो वह पैदल चलता
सबके आगे-आगे भागता।
कभी कदम न बढ़ाता एक
गोदी-गोदी की रट लगाता।
कभी चिल्लाता मेरा मेरा
ये भी मेरा, वह भी मेरा।
जब उसको नींद सताती
थोड़ा पढ़कर फट् सो जाता।



❑ सुरेश कुमार, तिलोनिया, अजमेर, राजस्थान



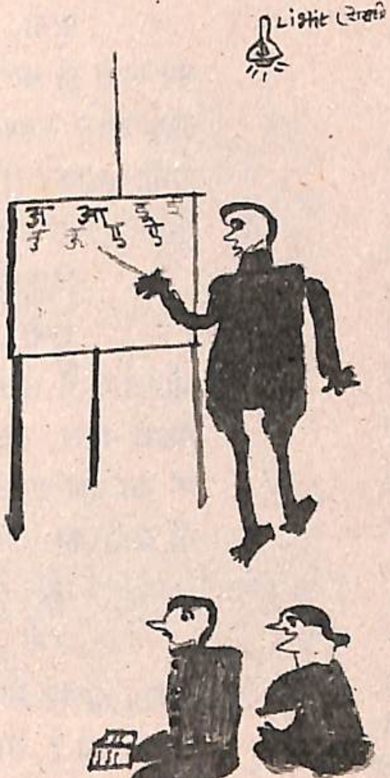
सभी चित्र :ज्योति कुमार पाण्डेय, आठवीं, रुहिया, म.प्र.



ये दिन

ये दिन आगे बढ़ने के
ये दिन जी भर पढ़ने के
चित्र बनाओ मेहनत से
ये दिन ऊँचे चढ़ने के
अपने सिर चमकीला
ये दिन सेहरा मढ़ने के
इतिहासों में अपना नाम
ये दिन हँसकर जड़ने के
सुस्ती से और आलस से
ये दिन पल-पल लड़ने के
छुट्टी की कर दो छुट्टी
ये दिन नहीं अकड़ने के

❑ पुष्पा अधिकारी, बारह वर्ष, भदेलभाड़ा, पिथौरागढ़, उ.प्र.



शोभा जैन, आठवीं, अकोदिया मण्डी, शाजापुर, म.प्र.

मेनाल की सैर

मैंने अपने कई दोस्तों से मेनाल फॉल (जल प्रपात) के बारे में सुन रखा था। लेकिन मैं अभी तक वहाँ गया नहीं था। अतः एक रविवार को पापा ने वहाँ जाने का कार्यक्रम बनाया तो मैं खुश हो गया। सबेरे-सबेरे मम्मी, पापा, चाचा और मैं जीप से रवाना हुए। मेनाल यहाँ से करीब 150 किलोमीटर से भी ज़्यादा दूर है। यह चित्तौड़गढ़ ज़िले की बेगू तहसील में है।

करीब 11 बजे हम वहाँ पहुँचे। वहाँ नीचे एक कुण्ड था। वहाँ का रास्ता ऊबड़-खाबड़ था। नीचे एक बहुत बड़ा झरना गिर रहा था। चारों तरफ बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं। वहाँ बहुत सारे लोग आए हुए थे। पापा और चाचा के साथ मैं भी झरने में नहाया। झरना बहुत तेज़ आवाज़ से गिर रहा था। अतः शुरू में मुझे डर लग रहा था। पर बाद में मज़ा आया।

फिर खाना खाकर हम सभी ऊपर आए। यहाँ कुछ पुराने मंदिर थे। क़रीब तीन बजे हम रवाना हुए। लौटते में हम वहाँ के मज़े की बात करते हुए आए।

❑ ध्रुव गुप्ता, मनासा, मन्दसौर, म.प्र.

ताल-तलैया

नटखट छोटे-मझले भैया!
सुनो, सुनो ऐ ताल-तलैया!
भर जाते हो कभी लबालब
लहर-लहर लहराते हो
कभी सूखकर तुम बिसूरते
मुँह बाए पछताते हो
बिछुड़ गए क्या बापू-मैया?
सुनो, सुनो ऐ ताल-तलैया!
ओल्हा-पाती खेल रचाते
मेंढक राजा, मछली रानी
माँ का दूध समझकर वे ही
पी जाते का तेरा पानी?
जल में नैया, भूल-भुलैया
सुनो, सुनो ऐ ताल-तलैया!
ख़ाली होकर भरना ही तो
जीवन की है रीत पुरानी
तेरी ख़ातिर ही आती है
बरखा लिए झमाझम पानी
ताक धिनाधिन-ता-ता थैया
सुनो, सुनो ऐ ताल-तलैया!

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी



फोटो : बिम्ब

तालाब

❑ कविता सुरेश

गर्मी का मौसम है। ऐसे में पानी की बात चले तो कितनी ठण्डक पहुँचती है। है न? कहीं किसी घने पेड़ की छाया हो, आसपास की किसी नदी या तालाब से बहकर आती ठण्डी-ठण्डी हवा हो - बस, गर्मी से मुरझाए तन-मन को और क्या चाहिए? लो तुम्हारा मन तो तालाब में डुबकियाँ लगाने लगा।



'अनुभव' से साभार।

तालाब की बात चलती है तो भोपाल ताल की बात भी निकल ही आती है। दरअसल कई दिनों से हमारे दिमाग़ में यह बात थी कि तुम्हें इस तालाब के बारे में बताएँ। वो तुम इस अंक में पढ़ ही रहे हो। पर साथ ही साथ यह भी सोचा कि सिर्फ़ भोपाल के तालाब के बारे में ही क्यों? इस बहाने क्यों न तालाबों के बारे में थोड़ी सामान्य चर्चा भी की जाए।

तुम्हें पता है हमारे देश में कुल कितने तालाब हैं? यही कोई बारह-तेरह लाख! तुम्हें अगर यह गप्प लगे तो चलो, हिसाब लगाएँ। भोपाल का पड़ोसी ज़िला है रायसेन। यहाँ एक पहाड़ी पर बने क़िले में छोटे-बड़े मिलाकर कोई ढाई सौ तालाब होंगे। रीवा ज़िले का एक गाँव है - ताल मुकेदान। इस गाँव की आबादी है क़रीब डेढ़ हज़ार और तालाब हैं दस। इसी के पास एक और गाँव है जोड़ौरी। आबादी है क़रीब ढाई हज़ार और तालाब हैं कुल बारह। थक गए न? लेकिन एक समय अकेली रीवा रियासत में ही कोई पाँच हज़ार तालाब थे।

क्यों ज़रूरी हैं तालाब?

आओ, यह जानने की कोशिश करें कि तालाब बनाने की आख़िर ज़रूरत ही क्या है? वह भी तब, जबकि हमारी धरती का तीन-चौथाई हिस्सा पानी में डूबा हुआ है।

समुद्र पृथ्वी की सतह का कुल 71 प्रतिशत भाग घेरे हुए हैं। सामान्यतः इनका पानी हमारे किसी काम का नहीं है। इसे न तो पिया जा सकता है, न यह सफ़ाई के काम आ सकता है। और न ही इससे सिंचाई हो सकती है। हाँ, नमक बनाने के काम ज़रूर आता है। समुद्रों के अलावा भी खारा पानी काफ़ी मात्रा में है। ताज़ा पानी जो कि हमारे और पेड़-पौधों तथा पशु पक्षियों के काम का है, उसकी मात्रा ज़मीन पर उपलब्ध पानी की केवल 0.4 प्रतिशत ही है; यानी 100 लीटर में से केवल 400 मिली लीटर। इसका भी 98 प्रतिशत भाग प्राकृतिक झीलों में है, जिसका 80 प्रतिशत केवल 40 बड़ी झीलों में है। अब हमारे काम का पानी रह गया केवल वर्षा का पानी और वह पानी, जो नदियों, कुओं, तालाबों आदि में है।

जब मनुष्य कुएँ, तालाब, बाँध आदि नहीं बनाता था तब वर्षा से मिलने वाला ताज़ा पानी, नदी-नालों में से होकर वापस समुद्र में पहुँच जाता था। अभी भी हालत यह है कि मान लो यदि पृथ्वी का सारा पानी दो लीटर के बराबर हो, तो उसमें ताज़े पानी की मात्रा कुल आधे चम्मच के बराबर और नदी, झीलों के पानी की मात्रा होगी केवल

एक बूँद। यह पानी भी, आमतौर पर जहाँ इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है वहाँ नहीं होता।

तुमने नर्मदा नदी पर बन रहे सरदार सरोवर बाँध के बारे में ज़रूर सुना होगा। पूरा बन जाने पर यह हमारे देश का सबसे बड़ा बाँध होगा। कहा जा रहा है कि इस बाँध से कच्छ और राजस्थान के रेगिस्तानों में पीने और सिंचाई के लिए पानी पहुँचाया जाएगा। लेकिन, यह सम्भावना अभी तक केवल विचार ही है जबकि इस बाँध से जो नुकसान हो सकते हैं वे सामने ही हैं। हर बड़े बाँध से हज़ारों गाँव पानी में डूबते हैं और आसपास के इलाक़ों में भूकम्प का ख़तरा पैदा हो सकता है।

फ़िलहाल इतना ही कि बड़े बाँध, पानी की कमी वाले इलाक़ों में पानी पहुँचाने का हानिरहित और बहुत अच्छा उपाय नहीं कहे जा सकते। इसका सबसे अच्छा तरीक़ा तो आसपास की ज़रूरतों और साधनों को ध्यान में रखकर बनाए गए कुएँ, तालाब, बावड़ी आदि ही हैं। कुछ इलाक़े ऐसे हैं जहाँ सिर्फ़ पीने का पानी लाने के लिए लोगों को मीलों दूर तक जाना पड़ता है। रेगिस्तानी इलाक़ों की बात अलग, मध्यप्रदेश के ठेठ मालवा में भी जहाँ 'डग-डग रोटी पग-पग नीर' एक कहावत है कुछ जगहों पर नाम के लिए भी पानी नहीं है।

भोपाल से क़रीब 20 किलोमीटर दूर ऐसा ही एक गाँव है सूखी सेवनिया। अभी कुछ साल पहले तक इस गाँव में पानी का अकेला स्रोत थे रेल के इन्जन! इस छोटे-से स्टेशन पर जैसे ही कोई गाड़ी पहुँचती, गाँव के लोग अपने बर्तन उठाए दौड़े चले आते। यह व्यवस्था भी कोई पुख़्ता सरकारी व्यवस्था नहीं थी बल्कि रेल्वे के गाड़ी चालकों की भलमन साहत-भर थी।



'हमारा पर्यावरण' से साभार

कब बना होगा पहला तालाब?

तालाब के इतिहास की कहानी से पहले एक बात साफ़ कर दें कि यहाँ केवल उन्हीं तालाबों की बात कर रहे हैं जिन्हें मनुष्य ने अपनी ज़रूरत से, सोच समझकर, ख़ुद बनाया है। कुछ प्राकृतिक घटनाओं के कारण भी तालाब बनते हैं जिन्हें आमतौर पर 'झील' कहा जाता है। झीलों के बारे में हम फिर किसी अंक में बात करेंगे।

मनुष्य के महाबली बनने की कहानी में एक समय आता है जब मानव समूह अपना घुमक्कड़ शिकारी जीवन छोड़कर बाक़ायदा बस्तियाँ बनाकर रहने लगे। याद करो कि उन्होंने बस्तियाँ बनाना क्यों शुरू किया?

आज के फिलिस्तीन नामक देश में एक बहुत पुराने नगर के अवशेष मिले हैं। ज़ेरिको नाम का यह नगर क़रीब दस हज़ार साल पहले बना। प्राचीन भारत के मोहें-जो-दड़ो और हड़प्पा के नगर (अब पाकिस्तान में) क़रीब साढ़े पाँच हज़ार साल पुराने हैं। तालाब बनाना मनुष्य ने इसी दौरान कभी शुरू किया होगा। हालाँकि इस बात की कोई पक्की जानकारी नहीं है कि सबसे पहला तालाब कब, किसने और कहाँ बनवाया। लेकिन मोहें-जो-दड़ो में सार्वजनिक हम्माम (स्नानागार) के अवशेष मिले हैं। इसे हम मनुष्य द्वारा बनाए गए तालाब का शुरुआती रूप मान सकते हैं।

मेसोपोटामिया में, लगभग मोहें-जो-दड़ो के ही समय की 'स्कूली अभ्यास पुस्तिकाएँ' मिली हैं। ये पुस्तिकाएँ गीली मिट्टी से बनी पट्टियाँ हैं। इन पर नुकीली चीज़ से लिखने के बाद उन्हें

सुखाकर आग में पका लिया जाता था। इनमें गणित के अभ्यास लिखे हुए हैं। ऐसे ही एक अभ्यास में यह पूछा गया है कि अगर एक आदमी एक दिन में इतनी मिट्टी खोदता है तो अलग-अलग गहराई के चार तालाब खोदने में कितने दिन लगेंगे?

ईसा की पहली शताब्दी के आसपास रोम के सम्राटों ने अपने महलों में आलीशान हम्माम बनवाए थे। इनमें एक साथ हज़ारों लोग नहा सकते थे। उस समय रोम के सम्पन्न निवासी अपना सारा दिन हम्मामों में बिताते थे। रोम का पाँपे नगर पहली शताब्दी ईसवी में विसूवियस नामक ज्वालामुखी के फटने से राख की दस मीटर मोटी परत के नीचे दब गया था। कोई दो सौ साल पहले पाँपे की खुदाई हुई। इस खुदाई में एक घर मिला है जिसके भीतर उद्यान भी है और तालाब भी। यह तो हुईं तुम्हारे लिए दुनिया-भर की जानकारियाँ, जिनसे तुम खुद यह अन्दाज़ लगा सकते हो कि तालाब बनने की शुरुआत कब हुई होगी। हम भी किसी नतीजे पर पहुँचना चाहते थे कि तालाब बनना आख़िर कब शुरू हुए?

इतिहास से मिली जानकारी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत में पाँचवीं शताब्दी तक तालाब बनाने की कला में काफ़ी निखार आ चुका था। पन्द्रहवीं शताब्दी तक अनगिनत तालाब

तालाब के हैं नाम अनेक

तालाब के अलग-अलग नाम हर जगह की अपनी बोली के आधार पर होते हैं। तालाब के इस्तेमाल या उसके गुण या किसी विशेष घटना पर भी तालाबों के नाम होते हैं। सागर, सरोवर, सर, सगरा, पोखर, पुष्कर, तलैया, बंध आदि तालाब के ही पर्यायवाची हैं। बहुत बड़े तालाब को **ताल** और बहुत छोटे को **पोखर** कहा जाता है। बंगाल में पहले लगभग हर घर के पिछवाड़े पोखर होता था। इनमें मछली पाली जाती थी। **कुण्ड** या **हौज़** छोटे लेकिन पक्के बने तालाब को कहा जाता है। उत्तरप्रदेश के हिमालय के पहाड़ी ज़िलों में तालाब को **चाल** कहते हैं। इन चालों के कारण कहीं-कहीं तो पूरे साल झरनों से पानी मिलता है। यह **चाल** कहीं **खाल** कहीं **तोली** कहीं **चौरा** भी हो जाता है। चारों ओर पक्के घाट से घिरे तालाब को **चोपरा, चौपरा** या **चौपड़ा** भी कहा जाता है। **गुहिया** यानी छिपे हुए छोटे तालाब जो कि बारिश का पानी जमा होने से खुद-ब-खुद बन जाते हैं। आमतौर पर दो गाँवों के बीच की सुनसान जगह पर इस तरह की गुहिया मिल जाती हैं। अपने-आप बने तालाब को छत्तीसगढ़ में **अमहा ताल** कहते हैं। **गुच कुलिया** ऐसा तालाब होता है जो छोटा लेकिन किनारे से ही गहरा होता है। छोटे, कम गहरे तालाब **चिखलिया, डबरा** या **डाबर** कहे जाते हैं। **बाय** या **बावड़ी** भी ऐसे ही तालाब को कहते हैं। पुराने तालाब जो ठीक-ठाक करके फिर काम में लाए गए हों उन्हें **पुरनैया** कहा गया और नए-नए बने ताल को **नौताल** या **नया ताल**।

तालाबों के इस तरह के नामों के अलावा पीने वाले पानी का तालाब अलग, निस्तारी का तालाब अलग होता है। नदी से भरने वाला तालाब **नद्या तालाब**, ज़मीन के अन्दर के पानी से भरने वाला **भूफोड़ ताल** कहा गया। इसी तरह यह सूची बहुत लम्बी हो सकती है। तालाबों के नाम पर गाँवों के नाम मिलते हैं। पर राजस्थान में तो कई गाँवों के नाम के साथ 'सर' जुड़ा हुआ है। और, सर का मतलब है तालाब। कुछ नाम हमें भी पता हैं जैसे गढ़सीसर, भादेसर, बीदारसर, जेतसर, लूणकरणसर, मोलासर, सालासर, उदयसर आदि। हो सकता है इन जगहों पर कभी तालाब बने हों या आज भी हों। या नहीं बने हों तो इस आशा से नाम के साथ 'सर' जुड़ा हो कि कभी तालाब बनेगा। क्या तुम इन जगहों में से किसी में रहते हो? या किसी ऐसी जगह को जानते हो जहाँ तालाब हो और नाम में 'सर' भी जुड़ा हो। हमें भी उसके बारे में लिखना।



पारदर्शी गाँधी शान्ति केन्द्र, दिल्ली के सौजन्य से।

जैसलमेर (राजस्थान) का तालाब गढ़सीसर। सात सौ साल पहले बना यह तालाब आज भी यहाँ पानी का मुख्य स्रोत है।

बनाए गए। इसके बाद के समय में लगातार युद्ध होते रहने के कारण तालाब ही क्या, जीवन के हर काम की गति धीमी पड़ गई।

कैसे बनते हैं तालाब?

बारिश के दिनों में अक्सर तुमने देखा होगा कि गली-मोहल्ले के छोटे-छोटे गड्ढे पानी से भर जाते हैं। ऐसे में हम कहते हैं न कि देखो कितने सारे तालाब भर गए। लेकिन, जब सच में तालाब बनाए जाते हैं, कि उनमें पानी भरे और वो पानी काम आ सके तो सिर्फ़ गड्ढा खोदने से काम नहीं चलता। बहुत सोच-समझकर यह काम किया जाता है।

यह सही है कि पहले-पहल तालाब राजाओं और धनी लोगों ने क़िलों और महलों में बनवाए लेकिन बाद में यह 'कला' आम लोगों की ज़रूरत बन गई। मनुष्य ने नई-नई जगहों पर बस्तियाँ बनाना शुरू कर दिया और साथ ही उसकी ताज़े पानी की ज़रूरत भी बढ़ती गई। लोग अपनी ज़रूरत के हिसाब से अपने गाँवों में ही तालाब बनवाने लगे। कुछ लोग इस काम में इतने माहिर हो गए कि उनकी एक अलग जाति ही बन गई। ये लोग तालाब बनाने की कला अपनी पिछली पीढ़ी से सीखते और अगली पीढ़ी को सिखाते जाते थे। अलग-अलग जगहों में इन्हें गजधर, गईधर आदि नामों से जाना जाता था। तालाब के लिए कौन-सी जगह सही होगी, कितना बड़ा तालाब बनेगा, कितनी गहराई होगी, कहाँ ज़ोर देना होगा - ये सब बातें इनके लिए बाएँ हाथ का खेल होती थीं। बिना किसी औज़ार और नाप-जोख के वे अपनी अनुभवी आँखों से परखकर ही ये सब बातें तय कर लेते थे। इस पर भी मजाल थी कि वे कभी चूक जाएँ? ये लोग किसी कॉलेज से पढ़े हुए नहीं थे लेकिन इनका सम्मान आजकल के इंजीनियरों से कहीं बहुत ज़्यादा था। क्योंकि, इनके लिए अपना काम केवल रोज़ी-रोटी का साधन नहीं बल्कि पूजा-जैसा होता था।

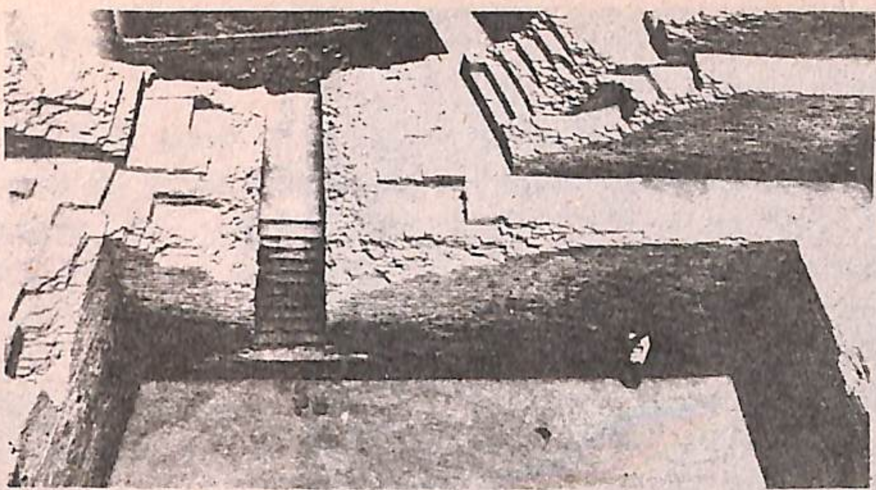


'आज भी खरे हैं तालाब' से साभार।

आमतौर पर दीवाली के बाद वाली एकादशी जिसे 'देव उठनी' या अनपूछी ग्यारस आदि कहा जाता है, को तालाब बनाने की शुरुआत होती। जगह तय करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता कि वह ढाल वाली हो, निचला क्षेत्र हो। जहाँ से पानी आएगा वह ज़मीन मुरूम वाली हो। उस तरफ शौच आदि के लिए भी लोग न जाते हों वग़ैरह।

इसके बाद **'आगौर'** यानी जहाँ से पानी आएगा, उस जगह की साफ़-सफ़ाई और सुरक्षा का इन्तज़ाम किया जाता। फिर **'आगर'** यानी जहाँ पानी इकट्ठा होगा उसे परखा जाता कि उस ज़मीन का स्वभाव कैसा है? यानी, पानी का दबाव पड़ेगा तो तालाब फूटेगा तो नहीं? तालाब का किनारा यानी **पाल** कितनी ऊँची और चौड़ी होगी और कहाँ बनेगी? तालाब पूरा भर जाने पर अतिरिक्त पानी निकलने की व्यवस्था कहाँ से होगी? इन सब बातों का अन्दाज़ कर लिए जाने के बाद तालाब की खुदाई शुरू होती। यह भी तय हो जाता कि कहाँ से मिट्टी निकलेगी और कहाँ-कहाँ डाली जाएगी। पाल से ठीक नीचे गहराई न हो नहीं तो पानी के दवाब से पाल कमज़ोर हो जाएगी। इसलिए, पाल से कितनी दूरी पर खुदाई की जाएगी यह तय होने के बाद गाँव-मोहल्ले के सभी लोग मिलकर काम शुरू कर देते।

मिट्टी की खुदाई शुरू होने के साथ-साथ ही जहाँ मिट्टी डाली जा रही हो वहाँ मिट्टी को दबाने का काम भी शुरू हो जाता। पानी भरने के बाद



'आज भी खरे हैं तालाब' से साभार

दो हज़ार साल से भी अधिक पुराना श्रृंगवेरपुर का यह तालाब खुदाई के दौरान मिला है। यह इलाहाबाद (उ.प्र.) से साठ किलोमीटर उत्तर में है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें पानी गंगा नदी से नहर के ज़रिए लाकर भरा जाता था। पानी मुख्य तालाब में आने से पहले पास में बने हौजों से गुज़रता था, ताकि कचरा तथा मिट्टी इन्हीं हौजों में रह जाए।

किनारे के जिस हिस्से पर पानी का दबाव ज़्यादा पड़ने की सम्भावना होती, वहाँ से किनारे को कोहनी के आकार में मोड़ दिया जाता ताकि दबाव कम हो सके और तालाब टूट न जाए।

मिट्टी का कच्चा काम पूरा हो जाने के बाद पक्का काम चूने, पत्थर से किया जाता था। तालाब के किनारों पर पत्थर से घाट बनाया जाता था। तालाब में एक जगह पाल से थोड़ी नीची रखकर **नेष्टा** बनाया जाता है। नेष्टा यानी वह जगह जहाँ से तालाब भरने पर अतिरिक्त पानी बहकर निकल सके।

तालाब बनकर तैयार होने के बाद पहली बारिश आने के साथ ही पानी धीरे-धीरे भरने लगता है।

सिमट सिमट जल भरहिं तलावा।
जिमि सदगुण सज्जन पहिं आवा॥

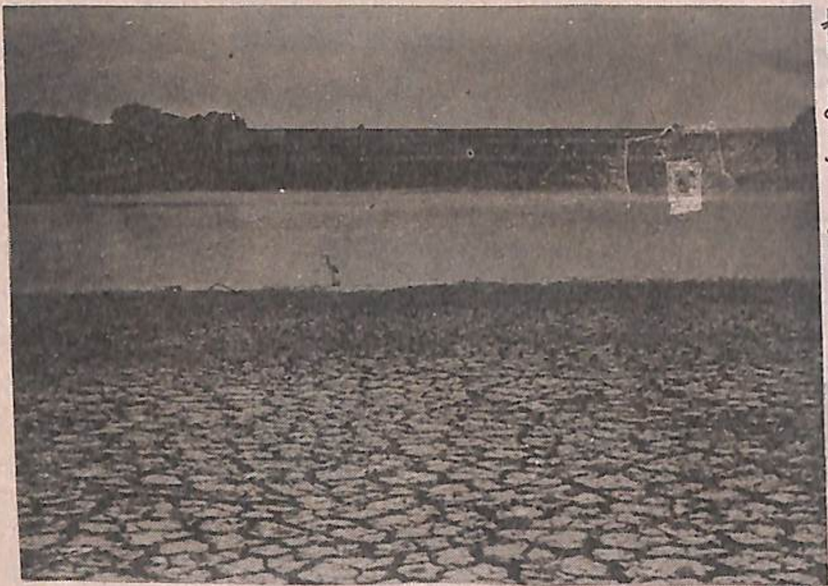
इसका अर्थ समझ में आया? तुलसीदास ने इस दोहे में यही कहा है कि जिस तरह लोगों में अच्छे गुण धीरे-धीरे आते हैं उसी तरह तालाब में पानी धीमे-धीमे भरता है। क्यों, तुम्हारा मन फिर तालाब में डुबकियाँ लगाने का तो नहीं होने लगा? ज़रूर लगाओ डुबकियाँ, पर देखो, पानी की साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना।

हम बात कर रहे थे तालाब बनाने के बारे में। इस सम्बन्ध में यह कुछ मोटी-मोटी बातें हैं क्योंकि तालाब बनाना तो बहुत बड़ा और समझ-बूझ का काम है। कई लोग मिल-जुलकर इस काम को पूरा करते थे। निश्चित ही तालाब बनाने का तरीक़ा सभी जगह एक जैसा नहीं होता होगा। हमारे ही देश में अलग-अलग जगहों पर विभिन्न तरीक़े काम में लाए जाते रहे हैं।

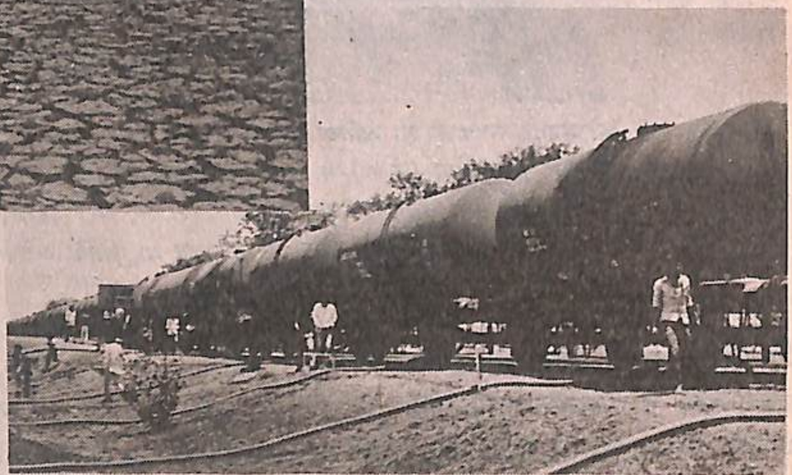
ज़रूरी है तालाब की देखभाल

कई लोगों की मेहनत से बना तालाब सदियों तक पानी की ज़रूरत पूरी करता रहे इसके लिए ज़रूरी है कि तालाब की अच्छी देखरेख हो। जब बारिश का पानी तालाब में जाता है तो आसपास की मिट्टी वग़ैरह भी साथ में जाती है। यदि यह मिट्टी तालाब में जमा होने दी जाए तो तालाब कब तक तालाब रहेगा?

पहले तालाब बनने का काम पूरा होते ही उसकी साफ़-सफ़ाई के बारे में भी सोच लिया जाता था। पानी में सफ़ाई के ख़्याल से मछली, केकड़े, कछुए छोड़े जाते थे। कई तरह के पौधे पानी में डाले जाते और किनारों पर पेड़ लगाना तो एक ज़रूरी बात समझी जाती थी। किनारे पर लगे पेड़ आसपास की मिट्टी को अपनी जड़ों में बाँधे रखते



दोनों छायाचित्र नई दुनिया, इन्दौर सन्दर्भ के सौजन्य से।



इन्दौर का सूखता यशवन्त सागर (ऊपर)। 1990 में देवास में पानी रेल टैंकरों से इन्दौर से लाया जाता था (दाएँ)।

जिससे पाल टूटने का ख़तरा कम हो जाता था। बिहार और उत्तरप्रदेश में तो कई जगह तालाब के किनारे सरसों की खली का धुआँ किया जाता ताकि वहाँ चूहे बिल न बना सकें।

ये काम तो वे हुए जो तालाब बनने के बाद एक-दो बार कर दिए जाते थे। लेकिन तालाब में जमा हुई मिट्टी साल के साल निकाली जाती थी। इस काम में चूकने का मतलब था तालाब को मौत की ओर धकेलना। धीरे-धीरे तली में जमा होने वाला कूड़ा-करकट एक दिन इसे किसी काम का नहीं रहने देता। हमारे आसपास ही हम देखते हैं कि आज कितने ही तालाब पुर चुके हैं, इसी मिट्टी और कचरे के कारण।

मध्यप्रदेश के इन्दौर और देवास शहरों की ही बात लें। इन शहरों में कभी तालाब थे। ज़ाहिर है, वे शहर की पानी की ज़रूरत पूरी करते होंगे। अब इन शहरों में पाइप लाइन से नर्मदा नदी का पानी पहुँचाया जा रहा है। सन् 1990 में देवास में पानी का इतना संकट था कि इन्दौर से रेलगाड़ी के टैंकरों में नर्मदा का पानी भरकर लाया जाता था।

बदहाल तालाब : ज़िम्मेदार कौन?

वास्तव में आज देश में ज़्यादातर तालाब संकट में हैं। अनगिनत तालाबों का आज नामो-निशान भी नहीं बचा है। जो हैं उनमें से कई तो तली में गाद, कीचड़, मिट्टी आदि जमा होने के कारण उथले होते जा रहे हैं। ऐसे क़ई तालाबों को विकास के नाम पर हो रहे निर्माण के कारण पूर दिया गया है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

कोई पचास साल पहले तक हर एक तालाब सारे समाज की मिली-जुली सम्पत्ति हुआ करता था। लोग मिलकर तालाब बनाते, मिल-जुलकर ही उसका पानी उपयोग करते और साल के साल, किसी त्यौहार की तरह, सब मिलकर उसकी सफ़ाई भी करते। लेकिन पिछले चालीस-पचास सालों में यह सामूहिक व्यवहार घटता गया है। और उसका ही नतीजा है कि एक के बाद एक तालाब

नष्ट होते जा रहे हैं और किसी को उनकी फ़िक्र ही नहीं है।

सच तो यह है कि तालाबों की दुर्दशा के लिए सरकार, समाज और हम सब; किसी न किसी रूप में ज़िम्मेदार हैं। हमारे देश का आर्थिक-सामाजिक ढाँचा भी कुछ इस तरह का बन गया है कि अमीरी और ग़रीबी के बीच की खाई बढ़ती ही जा रही है। पहले जहाँ केवल एक-दो व्यक्तियों की कमाई पर सारा परिवार गुज़ारा कर सकता था, वहीं अब ग़रीब और थोड़े कम ग़रीब परिवारों में क़रीब-क़रीब हर सदस्य को काम करना पड़ता है। दूसरी तरफ ऐशो-आराम की चीज़ों की बाढ़ आ गई है और रोज़गार के साधन कम होते जा रहे हैं। इन सब बातों ने मनुष्य के रहन-सहन के सरल-सामान्य तरीक़ों पर भी असर डाला है। लोग एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। इसी के साथ-साथ मिल-जुलकर किए जाने वाले कामों में लोगों की भागीदारी भी कम होती जा रही है। इसलिए स्वाभाविक ही है कि अपने में सिमटते लोगों का असर तालाबों पर भी पड़ रहा है और वे भी धीरे-धीरे सिमटते ही जा रहे हैं।

(लेख के लिए सन्दर्भ सामग्री आज भी खरे हैं तालाब; प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय एवं मानव और संस्कृति से।)

माथापच्ची-हल : मार्च, 95 अंक के

2. गुलाबिया ने सिर्फ़ उतने ही रुपयों और सामान का हिसाब जोड़ा जो उसने दुकानदार को दिए थे। पर अगर हम यह देखें कि दुकानदार ने गुलाबिया को कितना सामान दिया तो रहस्य खुल जाएगा।

   दुकानदार ने गुलाबिया को दो चादरें दीं। एक 50 रु. वाली और एक 100 रु. वाली। यानी कुल 150 रु. का सामान दिया। अगर गुलाबिया 50 रु. की चादर लौटाती है तो भी उस पर 100 रु. बकाया निकलते हैं।

3. 69

5. पहली स्थिति में दोनों बच्चों की लड़कियाँ होने की सम्भावना 1/3 है। दूसरी स्थिति में दोनों बच्चों के लड़के होने की सम्भावना 1/2 है।

6. (1) $[(5+1) \div 2] - 3 + 4 = 4$

   (2) $(6 \times 8) - (5 \times 7) - 9 = 4$

   (3) $[(7 \times 5) - (6 \times 4) - 3] \div 2 = 4$

   (4) $\frac{[(9 \times 8 \times (5-3)]^{1/2}}{4} + (7-6) = 4$

   (5) $[(8 \times 7 \times 3) + (6-5)]^{1/2} - 9 = 4$

7. (2) जरा और राज (3) गप और पग (4) मना और नाम (5) वायु और युवा (6) वन और नव (7) राज़ और ज़रा

4.



वर्ग-पहेली हल : 42

1 र	ज	2 त		3 पा		4 स	5 ब	क
म		6 न	ज़	रा	ना		द	
7 क	8 श			श		9 या	रा	10 ना
	11 ह	ल	12 ध	र		सा		रा
13 दी	द		ड़ा		14 खा		15 बा	ज़
ना		16 स		17 ग	जा	न	न	
18 र	19 की	ब		र			20 गी	21 त
	म		22 रा	ज	स्या	23 न		मा
24 का	त	र		ना		25 स	लि	ल

वर्ग पहेली - 42 का एक भी सर्वशुद्ध हल प्राप्त नहीं हुआ है। एक गलती वाला एक हल प्राप्त हुआ है। इसे भारती आठवीं, मैनपुर, रायपुर, म.प्र. ने भेजा है। इन्हें तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।

लड़की और खुमियाँ

❑ लेव तोलस्तोय

दो लड़कियाँ जंगल से खुमियाँ बटोरकर घर लौट रही थीं। उनके रास्ते में रेलवे लाइन आती थी। उन्होंने सोचा कि गाड़ी अभी दूर है, इसलिए वे रेल की पटरी लाँघने लगीं।

अचानक उन्हें इन्जन का शोर सुनाई दिया। बड़ी लड़की वापस भाग गई, मगर छोटी रेलवे लाइन लाँघ गई।

बड़ी लड़की ने चिल्लाकर अपनी बहन से कहा, 'वापस मत आना!'

मगर इन्जन नज़दीक आ गया था और इतना शोर मचा रहा था कि छोटी लड़की अपनी बड़ी बहन की बात साफ़तौर पर न सुन पाई। उसने सोचा कि उसे वापस भाग आने को कहा गया है। वह पटरी को लाँघती हुई वापस भाग चली, उसने ठोकर खाई और उसकी खुमियाँ बिखर गईं। वह खुमियाँ समेटने लगी।



इन्जन नज़दीक आ चुका था। ड्राइवर ने पूरे ज़ोर से सीटी बजाई।

बड़ी बहन चिल्लाई, 'खुमियाँ पड़ी रहने दो!' मगर छोटी लड़की को लगा कि उसे खुमियाँ समेटने के लिए कहा गया है। वह पटरियों के बीच रेंगती हुई खुमियाँ समेटती रही।

ड्राइवर के लिए गाड़ी रोकना सम्भव नहीं था। इन्जन ने एक बार फिर पूरे ज़ोर से सीटी बजाई और गाड़ी लड़की के ऊपर से गुज़र गई।

बड़ी लड़की चीख उठी और बिलख-बिलखकर रो पड़ी। सभी मुसाफ़िर खिड़कियों में से झाँक रहे थे। कंडक्टर यह देखने के लिए भागता हुआ गाड़ी के आख़िरी सिरे पर जा पहुँचा कि लड़की का क्या हुआ।

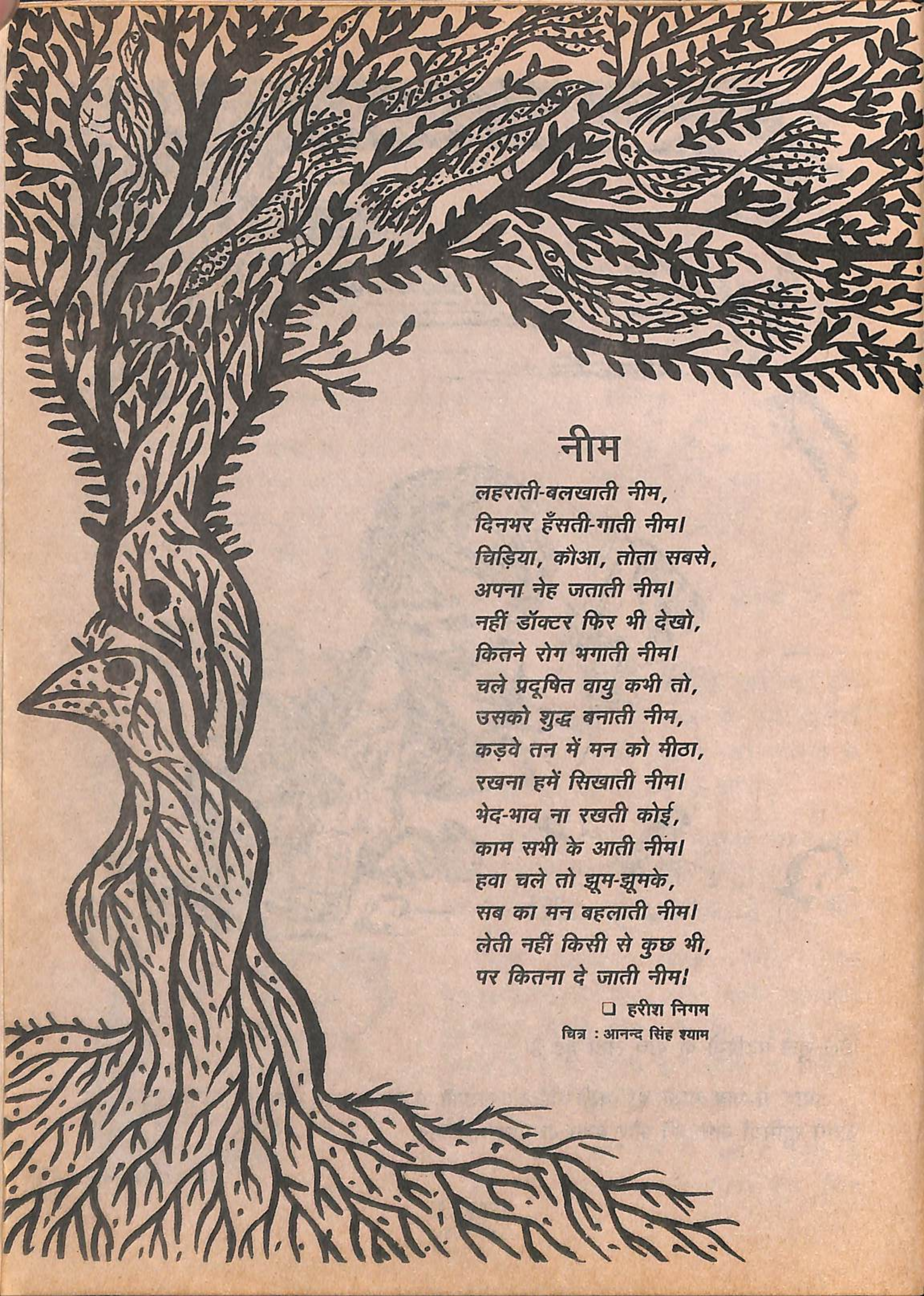
गाड़ी जब गुज़र गई तो सभी ने देखा कि लड़की सिर नीचे की ओर सटाए हुए, बिना



हिले-डुले पटरियों के बीच लेटी हुई है।

बाद में जब गाड़ी दूर चली गई तो लड़की ने सिर ऊपर उठाया, उठकर खड़ी हुई, उसने खुमियाँ जमा कीं और बहन के पास भाग गई।

सभी चित्र : अ. पखोमोव



नीम

लहराती-बलखाती नीम,
दिनभर हँसती-गाती नीम।
चिड़िया, कौआ, तोता सबसे,
अपना नेह जताती नीम।
नहीं डॉक्टर फिर भी देखो,
कितने रोग भगाती नीम।
चले प्रदूषित वायु कभी तो,
उसको शुद्ध बनाती नीम,
कड़वे तन में मन को मीठा,
रखना हमें सिखाती नीम।
भेद-भाव ना रखती कोई,
काम सभी के आती नीम।
हवा चले तो झूम-झूमके,
सब का मन बहलाती नीम।
लेती नहीं किसी से कुछ भी,
पर कितना दे जाती नीम।

❑ हरीश निगम

चित्र : आनन्द सिंह श्याम

भोपाल के ताल

❑ कविता सुरेश

ताल तो भोपाल ताल
बाकी सब तलैया

यह पंक्ति तुमने शायद सुनी हो। भारत का सबसे बड़ा माना जाने वाला यह 'बड़ा तालाब' मूलरूप से एक बरसाती नदी कोलांस पर बने मिट्टी के बाँध से बना है। कोलांस नदी आज के भोपाल के बैरागढ़ क्षेत्र से पश्चिमी दिशा की ओर बढ़ती हुई बड़े तालाब में बदल जाती है। ऐसा कहा जाता है कि यह बाँध परमार वंश के राजा भोज ने ग्यारहवीं सदी में बनवाया था। इसलिए इसे भोजताल भी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि बरसाती पानी के अलावा तालाब में पानी के अपने स्रोत भी हैं। यानी ज़मीन के अन्दर से झिर फूटकर तालाब को भरती रहती है। और इसी वजह से इसे 'बड़ी झील' भी कहा जाता है।

नदी पर बना बाँध आज भी अच्छी हालत में है। इसके ऊपर बीच में चौड़ी सड़क और उसके दोनों ओर दो उद्यान हैं। इन्हें 'कमला पार्क' के नाम से जाना जाता है। यह सड़क नए भोपाल को पुराने भोपाल से जोड़ती है। और बाँध 'बड़े' और 'छोटे' तालाब को अलग करता है। बाँध के नीचे से बड़े तालाब का पानी छोटे तालाब में जाने का इन्तज़ाम है। ज़रूरत न होने पर पानी निकलने की इस जगह यानी निकास को बन्द कर दिया जाता है।

हमेशा से भोपाल शहर की पानी की ज़रूरत बड़े तालाब से पूरी होती रही है। हालाँकि पहले शहर इतना बड़ा नहीं था। किसी समय भोपाल मालवा के राजाओं के राज्य का एक हिस्सा था। 1539 में अलग से भोपाल रियासत बनने के बाद



छायाचित्र : बिम्ब स्टूडियो

बड़े तालाब का एक किनारा। हमसे दूर कमला पार्क की ओर जाती सड़क।



छायाचित्र : भावना जायसवाल

बड़े तालाब में नाव। उस पार दिखाई दे रही इमारतों में एशिया की सबसे बड़ी मस्जिद 'ताज-उल-मसजिद' की मीनारें भी नज़र आ रही हैं।

'बड़े तालाब' का पानी शहर के लोगों की प्यास बुझाता रहा। लेकिन पानी पहुँचाने के लिए पाइप लाइन सबसे पहले 1870 में डाली गईं। उस समय की भोपाल की नवाब कुदसिया जहाँ बेगम ने शहर में पीने का पानी पहुँचाने के लिए योजना बनाई। इसके तहत मोहल्लों में पाइप लाइन के ज़रिए पानी पहुँचाया जाता था। इस योजना का काम स्कॉटलैण्ड से बुलाए गए एक इन्जीनियर डेविड कुक को सौंपा गया। पहले पानी भाप से चलने वाले पम्प के द्वारा एक हौज़ में इकट्ठा किया जाता था। फिर वहाँ से गुरूत्व बल प्रणाली से पाइप में होता हुआ नलों में पहुँचता था। यह तो तुम जानते ही हो कि पानी ऊपर से नीचे की ओर बहता है। इस प्रणाली में भी यही किया गया, हौज़ एक ऊँची जगह बनाई गई जिससे पानी अपने आप दवाब के कारण नलों तक जाता था। 1956 तक इसी योजना से भोपाल को पानी मिलता रहा। बाद में ज़रूरत बढ़ने के साथ-साथ योजना का विस्तार किया जाता रहा।

भोपाल के बड़े तालाब की विशेषता रही है कि इसका पानी काफ़ी हद तक साफ़ रहता है। उसका कारण यह कि पानी की सफ़ाई में सबसे पहला चरण होता है पानी को घुमाना, वो इस तालाब में ख़ुद-ब-ख़ुद हो जाता है। होता यह है कि कोलांस नदी पश्चिम से तालाब में मिलती है और बैरागढ़ क्षेत्र से बहती हुई लगभग सीधी रेतघाट तक आती है। रेतघाट से टकराकर पानी वापस लौटता है तो खुद-ब-खुद गोल घूमता जाता है। 1947 तक भोपाल शहर को पानी तालाब से सीधे ही नलों से पहुँचा दिया जाता था। उसे किसी सफ़ाई आदि की ज़रूरत नहीं होती थी। पर आज तालाब का पानी विभिन्न कारणों से इतना ज़्यादा प्रदूषित हो गया है कि पानी को नलों में भेजने के पहले साफ़ करना होता है। आजकल क़रीब 14 लाख की आबादी के इस शहर को पानी की पूर्ति के लिए बड़े तालाब के अलावा कोलार नदी पर बनी एक परियोजना का सहारा भी लेना पड़ रहा है। यदि समय-समय पर बड़े तालाब की सफ़ाई होती रहती तो केवल इसका पानी ही 20 लाख की आबादी के लिए पर्याप्त था। आज भोपाल शहर में जो लोग सबसे ज़्यादा उम्र के हैं उन्होंने भी इस तालाब की कभी सफ़ाई होते या उसमें से कीचड़, गाद निकलते नहीं देखी।

बड़े तालाब के पानी का मुख्य स्रोत वर्षा का



भदभदा के खुले दरवाज़ों से निकलता पानी और जमा भीड़।

पानी है जो कोलांस नदी के अलावा अन्य कई छोटे-छोटे बरसाती नदी, नालों से आता है। जिस समय कोलांस पर मिट्टी का बाँध बना था उसी समय तालाब के दक्षिण में एक नेष्टा भी बनवाया गया था। इसे अब भदभदा के नाम से जाना जाता है। नेष्टा यानी अतिरिक्त पानी निकलने की जगह। यह नेष्टा इस तरह बनाया गया था कि तालाब में अधिक पानी होने पर धीरे-धीरे निकलता रहे ताकि आसपास के गाँवों को कोई नुकसान न पहुँचे। यही पानी कलियासोत नदी के रूप में बहता है।

1963 तक बड़े तालाब की सतह (यानी भरे तालाब की सतह) का क्षेत्रफल लगभग 17 वर्ग किलोमीटर था। इसी साल बढ़ती आबादी के लिए पानी का इन्तज़ाम करने के लिए भदभदा नेष्टा को एक छोटे बाँध का ही रूप दे दिया गया। इससे बड़े तालाब की सतह का क्षेत्रफल बढ़कर 30 वर्ग किलोमीटर से भी अधिक हो गया। आजकल बड़े तालाब में लगभग 36 लाख घन फीट पानी इकट्ठा किया जा सकता है। इससे अधिक पानी होने पर भदभदा बाँध के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, ताकि अतिरिक्त पानी निकल जाए। बारिश के मौसम में जब अतिरिक्त पानी निकालने के लिए भदभदा के दरवाज़े खोले जाते हैं तब यह शहरवासियों के लिए ख़ासा आकर्षण का केन्द्र होता है।

बड़े तालाब की लम्बाई-चौड़ाई सभी जगह एक जैसी नहीं है। एक किनारे से दूसरे किनारे तक की लम्बाई ज़्यादा से ज़्यादा 13 किलोमीटर और चौड़ाई 5 किलोमीटर है। तालाब की गहराई भी कहीं बहुत अधिक तो कहीं बहुत कम है। तालाब के तीन तरफ पहाड़ियाँ हैं। इन पर आम लोगों के कच्चे-पक्के मकानों से लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री की विशाल कोठी भी है। भारत भवन, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, वनविहार (नेशनल पार्क), गाँधी चिकित्सा महाविद्यालय आदि भी इन पर फैले हैं।

भोपाल के पड़ोसी ज़िले रायसेन की गोहरगंज तहसील में एक गाँव है भोजपुर। यह गाँव भोपाल से कोई 28 कि.मी. दूर है। यहाँ एक टूटे बाँध के अवशेष दिखाई देते हैं। ऐसा कहा जाता है कि भोपाल का बड़ा तालाब पहले भोजपुर तक फैला हुआ था। भोपाल से 23 कि.मी. दूर स्थित मण्डीदीप नामक जगह है। कहते हैं यह जगह इस तालाब का एक द्वीप थी। ऐसा बताया जाता है कि उस समय तालाब का कुल क्षेत्रफल 250 वर्ग मील था। पन्द्रहवीं शताब्दी में मालवा के सुल्तान होशंगशाह ने लगातार युद्धों के कारण इस तालाब

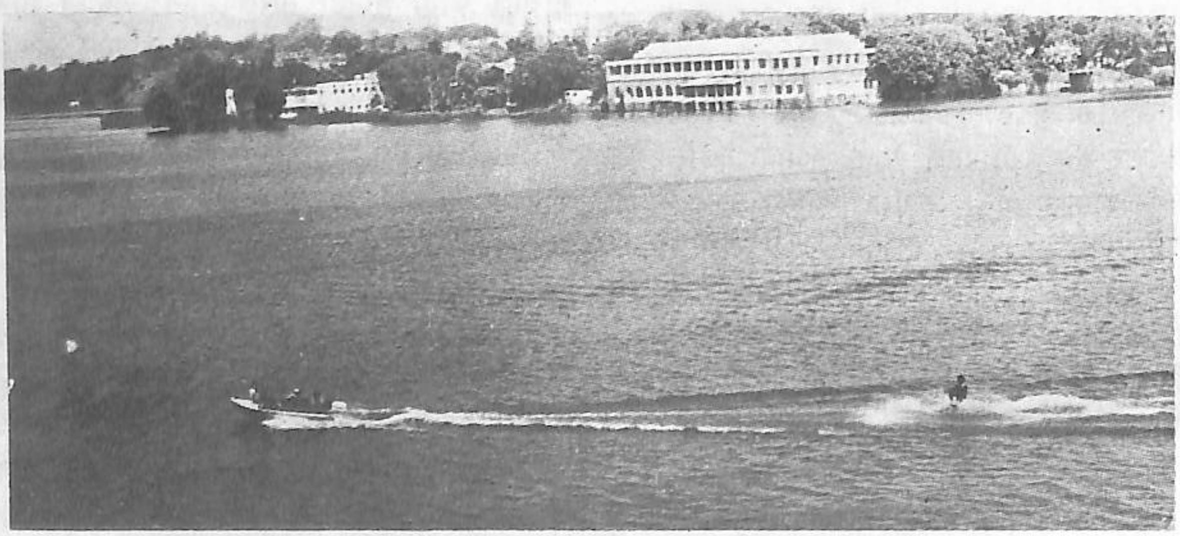
को तुड़वा दिया। तालाब को तोड़ने का काम एक बड़ी फ़ौज ने तीन माह तक किया और कहा जाता है कि तीन साल तक पानी बहता रहा।

भारत के इम्पीरियल गज़ेटियर में शामिल एक रिपोर्ट और भोपाल के सबसे पुराने लिखित इतिहास ताज-उल-इकबाल में भी इसी कहानी का ज़िक्र किया गया है।

लेकिन, इस कहानी को सच मान लिया जाए तो सवाल उठता है कि जब तालाब तोड़ा गया और उसका सारा पानी बह गया तो उसी समय बड़ा तालाब भी ख़ाली हो जाना चाहिए था। इसके साथ ही, कलियासोत नदी भी उसी समय सूख जानी चाहिए थी। लेकिन, ऐसा कभी नहीं हुआ और इसी कारण कई लोग मानते हैं कि भोपाल का बड़ा तालाब राजा भोज के समय से पहले भी रहा होगा। इस पर बाँध राजा भोज ने बनवाया जिससे इसका नाम 'भोज ताल' पड़ गया। भोजपुर का तालाब भी राजा भोज ने बनवाया और उसे भी भोज ताल कहा गया। हमें लगता है यह गड़बड़ दोनों के नाम एक जैसे होने की है जिससे दोनों तालाबों से जुड़ी हुई कहानियाँ आपस में गड्ड-मड्ड हो गईं।

बहरहाल यह तो हुई बड़े तालाब की मुख्य कहानी। इससे जुड़ी और भी ढेरों कहानियाँ कही जाती हैं। अब यह तो होता ही है, हर छोटी-बड़ी चीज़ के साथ कोई न कोई कहानी जुड़ी होती है। भोपाल के 'छोटे तालाब' के बारे में भी एक कहानी तुम्हें सुनाते हैं। छोटे तालाब पर एक 'पुल पुख़्ता' यानी ठोस पुल बना हुआ है। इसे 1794 में उस समय के नवाब हयात मोहम्मद खाँ के दीवान छोटे खाँ ने बनवाया था। आज यह बाँध-नुमा पुल सुल्तानिया अस्पताल और जहाँगीराबाद के बीच स्थित है। बाद में, 1877 में नवाब शाहजहाँ बेगम ने छोटे तालाब पर एक नेष्टा बनवाया जो पुल पुख़्ता के भीतर से निकलता है। इसमें से होकर छोटे तालाब का पानी उत्तर दिशा में पातरा नाम के नाले में जाता है।

तुम सोच रहे होगे कि इसमें कहानी जैसा क्या था? कहानी यह है कि जिस जगह पर आज पुल है वह दो सौ साल पहले के भोपाल शहर की सीमा हुआ करती थी। आज के यादगार-ए-शाहजहाँनी पार्क, रेल्वे स्टेशन वग़ैरह जहाँ हैं वहाँ तब पानी ही पानी था। पानी के एक



छायाचित्र : नवल जायसवाल

छोटे तालाब में मोटर बोट। सामने महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय दिख रहा है। महाविद्यालय का छात्रावास इसी तालाब के दूसरे किनारे पर है। छात्राएँ नाव से छात्रावास से महाविद्यालय जाती हैं और फिर नाव से ही वापस लौटती हैं।



तीन तालाबों की श्रृंखला का सबसे ऊपर वाला यानी पहला मोतिया तालाब। इसमें पानी तो है, पर तालाब की हालत बहुत अच्छी नहीं है।

ओर था भोपाल शहर और दूसरी ओर था जंगल। कहते हैं कि एक बार नवाब को जंगल में जाकर शिकार खेलने का मन हुआ। नवाब ने अपने दीवान से कहा कि उस पार जाने के लिए एक हाथी ख़रीदा जाए। दीवान चतुर रहे होंगे। उन्होंने कुछ समय की मोहलत माँगी और हाथी ख़रीदने के बजाय एक पुल बनवा दिया। बिल्कुल पुख़्ता पुल। सोचा होगा, हाथी तो सिर्फ़ नवाब साहब के काम आएगा लेकिन पुल से सभी का आना-जाना हो सकेगा। यह पुल पुख़्ता आज भी सलामत है और इस पर से सभी का आना-जाना बना हुआ है।

यह पुल जिसे अब 200 साल हो चुके हैं उस समय की इन्जीनियरिंग का शानदार नमूना है। केवल एक बार, 1974 में बहुत ज़्यादा पानी गिरने की वजह से इसमें कुछ दरारें पड़ गई थीं, तब इसे और मज़बूत किया गया।

छोटे तालाब के चारों तरफ शहर की घनी बस्तियाँ हैं। इसके एक किनारे पर महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय और दूसरे किनारे पर मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय है। छोटा तालाब बड़े तालाब से तो छोटा ही है, फिर भी काफ़ी बड़ा है। इसके किनारे-किनारे चलकर तालाब का पूरा चक्कर लगाएँ तो यह दूरी लगभग 10-12 किलोमीटर होगी। बड़े तालाब की तुलना में यह अधिक गहरा है। तालाब के आसपास के घरों में जब रात को बत्तियाँ जल जाती हैं तो उनकी रोशनी की परछाईं से इसकी सुन्दरता और बढ़ जाती है।

भोपाल को यूँ तो आज भी 'ताल-तलैयों' और 'शैल-शिखरियों का शहर' कहा जाता है। लेकिन हालत यह है कि अब सारे शैल-शिखरों (पहाड़ियों) पर इमारतों का जाल बिछ चुका है और कुछ ही दिनों में उनका नामोनिशान भी नहीं मिलेगा। ताल-तलैयों की हालत भी ठीक नहीं है। कुएँ, बावड़ियाँ और कोई तीन दर्ज़न ख़ूबसूरत बाग़-बग़ीचों में से कुछ तो पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं, बाक़ी अगर यही हाल रहा तो आने वाले सालों में नष्ट हो जाएँगे।

इसी तरह नष्ट होती जा रही है भोपाल की तीन तालाबों वाली एक श्रृंखला। कोई सवा सौ साल पहले भोपाल की नवाब बेगमों में पहली, नवाब कुदसिया बेगम ने ताज-उल-मसजिद (जो



छायाचित्र: बिम्ब स्टूडियो

तीन तालाबों की शृंखला का दूसरा तालाब जो धीरे-धीरे पुरता जा रहा है।

कि एशिया की सबसे बड़ी मस्जिद है) का निर्माण शुरू करवाने के साथ ही मस्जिद की उत्तरी दिशा में तीन तालाबों की एक शृंखला बनवाई थी। इनमें सबसे ऊपर वाले को मोतिया तालाब कहा जाता है। मोतिया तालाब जब पूरी तरह भर जाता था तो उसका अतिरिक्त पानी दूसरे नम्बर वाले तालाब में पहुँच जाता था। पानी जाने के लिए मोतिया तालाब में अन्दर ही रास्ते बने हुए हैं। जब दूसरे नम्बर का तालाब भी भर जाता तो उसका अतिरिक्त पानी तालाब के अन्दर बने रास्तों से तीसरे तालाब में पहुँच जाता था। और, तीसरे तालाब का अतिरिक्त पानी पूर्व दिशा में बाग मुंशी हुसैन खाँ के बीच से निकलकर एक नाले से बह जाता था। ये तीनों ही तालाब कोई तीन साल पहले तक, बेहद खूबसूरत थे। लेकिन आज इन तालाबों के पानी की निकास व्यवस्था पूरी तरह से बरबाद हो चुकी है। मोतिया तालाब की सुन्दरता मोतियों को भी मात करती थी। आज इस तालाब के चमचमाते घाट बुरी तरह से टूट-फूट चुके हैं और इसके उत्तरी किनारे पर अतिक्रमण हो रहा है। बीच वाले तालाब को करीब-क़रीब पूरा ही पूरकर लोगों ने उसमें मकान बना लिए हैं। सबसे नीचे वाले तालाब के घाट भी टूट-फूट चुके हैं।

भोपाल के सभी तालाबों में साफ़-सफ़ाई की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। बड़े तालाब में दिनों-दिन इकट्ठी होती मिट्टी-कीचड़ से तालाब में भरने वाले पानी की मात्रा में कमी आती जा रही है। इधर छोटे तालाब में जलकुंभी फैलने से पानी सूखता रहता है और शहर की ज़्यादातर गन्दी नालियाँ भी छोटे तालाब में आकर मिलती हैं।

सन् 1989 में पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाले एक संगठन ने प्रशासन और जनता के साथ मिलकर बड़े तालाब की सफ़ाई का काम शुरू किया था। कई दिनों तक ज़ोरदार प्रचार के बाद एक दिन ढेर सारे लोग इकट्ठे हुए और 'झील की सफ़ाई करते हुए' फोटो खिंचवाए। बाद में इस कार्यक्रम का क्या हुआ, पता नहीं। हाँ तालाब के किनारे-किनारे एक सड़क बनाने के लिए कोई तीन साल पहले तालाब से लगे फतेहगढ़ क्षेत्र में हज़ारों मकान तोड़ दिए गए। यह सड़क तो अभी बन ही रही है। बड़े तालाब के उत्तरी किनारे पर इस सड़क के बीच में आने वाले पेड़ों को उखाड़ने के साथ-साथ तालाब के कुछ हिस्से को भी पूरा जा रहा है।

इसी तरह 1990 में छोटे तालाब के दक्षिणी किनारे को गहरा करने की करोड़ों रुपए की एक



नए भोपाल के शाहपुरा क्षेत्र में पहाड़ियों से घिरा एक छोटा तालाब।

योजना पर काम शुरू हुआ। जिस हिस्से को गहरा किया जाना था उसे मिलाकर क़रीब चार एकड़ का क्षेत्र आज पूरी तरह से सख्त ज़मीन में बदल गया है। इसी किनारे के एक हिस्से को 'और अच्छी तरह से' पूरकर रवीन्द्र भवन से राजभवन की ओर जाने वाली सड़क को चौड़ा किया जा रहा है। कुछ साल पहले छोटे तालाब की बिगड़ती हालत को देखते हुए भोपाल विश्वविद्यालय के झील विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों की एक टीम ने इसका अध्ययन किया था। इस अध्ययन के अनुसार यह तालाब एक सेप्टिक टैंक में बदलता जा रहा है। टीम ने चेतावनी दी है कि, 'यदि ऐसी ही हालत बनी रही तो हम अपनी ही ज़िन्दगी में इस सारस के आकार वाले सुन्दर तालाब को मरता हुआ देखेंगे।'

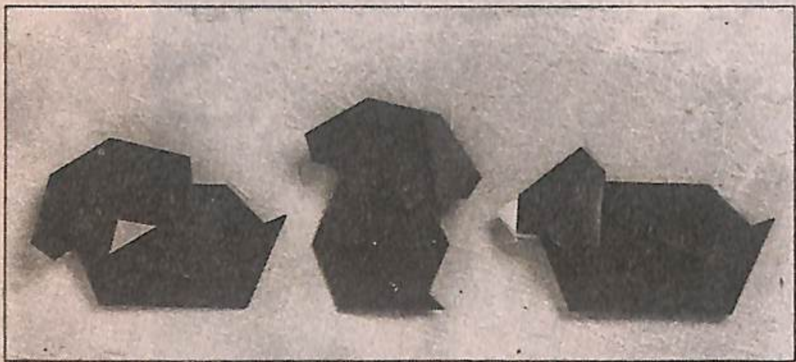
हर साल साइबेरिया से कई प्रकार के पक्षी जाड़ों में बड़े तालाब में प्रवास पर आते रहे हैं। लेकिन तालाब में बढ़ती हुई दखलंदाज़ियों के कारण इनकी संख्या में भी कमी आती जा रही है।

भोपाल के तालाबों की इस कहानी में सब-कुछ बुरा ही हो ऐसा नहीं है। अगर पुराने तालाब नष्ट हो रहे हैं तो कई नए तालाब बने भी हैं। असल में भोपाल का इलाक़ा छोटी-बड़ी पहाड़ियों वाला है। जिनसे हर बरसात में कई नदी-नालों में पानी भर जाता है। पिछले चालीस सालों में इस तरह की कलियासोत, हलाली जैसी छोटी नदियों पर छोटे-छोटे बाँध बनाए गए हैं। केरवां, कोलार और अजनाल पर भी ऐसे ही बाँध हैं। इन बाँधों का पानी, आसपास के गाँवों में खेती और पीने के लिए पहुँचाया जाता है। यहाँ एक ख़ास बात यह भी जान लेने की है कि इस इलाक़े में बारिश काफ़ी अच्छी होती है जिससे यहाँ की साल भर की पानी की ज़रूरत, सही इन्तज़ाम से यहीं पूरी हो सकती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि काम आ सकने वाले पानी की एक-एक बूँद को इकट्ठा किया जाए। तालाब यही ज़रूरत पूरी करते हैं। हमारे आसपास जो तालाब हैं उनमें से ९९ प्रतिशत से भी अधिक हमें हमारे पूर्वजों से अमानत के रूप में मिले हैं। आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए हमें यह धरोहर बचानी भी है और बढ़ानी भी।

(सन्दर्भ सामग्री 'द गाइड टू भोपाल' से)

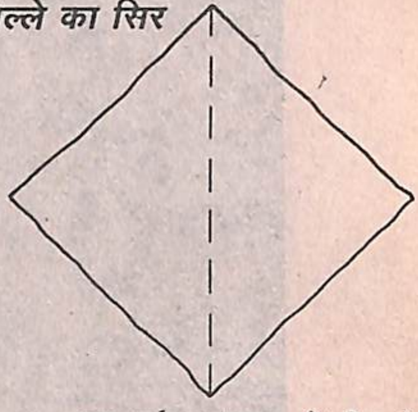
❑❑❑

पिल्ला

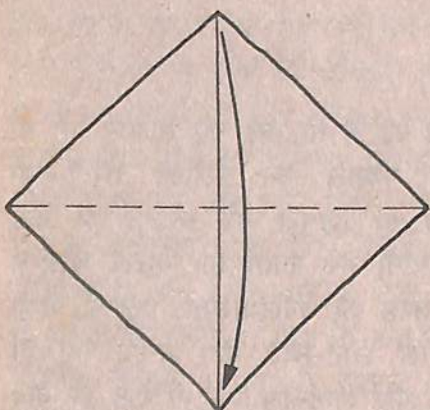


इस बार तुम्हें पिल्ला बनाना बता रहे हैं। इसमें सिर अलग काग़ज़ से बनेगा और धड़ अलग काग़ज़ से। इस चित्र में दिखाए तीन पिल्लों में से दो को बनाने के तरीके हम बता रहे हैं। तीसरा तुम खुद बनाने की कोशिश करो।

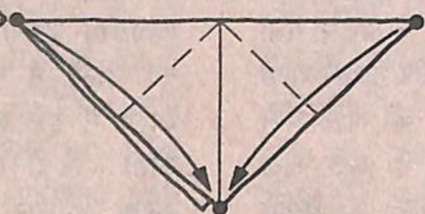
पिल्ले का सिर



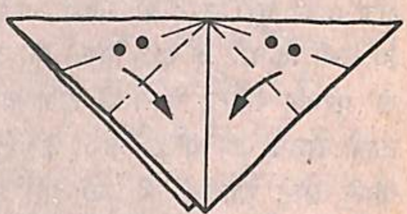
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके खोल लो।



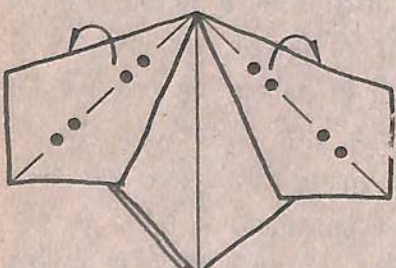
2. अब फिर टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।



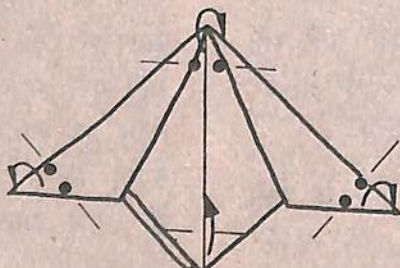
3. ऐसी आकृति मिलेगी। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



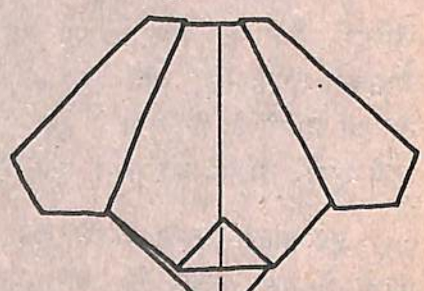
4. मोड़ पक्के करके खोल लो। अब ऊपर के दोनों किनारों को खोलते हुए दबाओ।



5. इस तरह की आकृति मिलेगी। अब दोनों ओर की चौकोर आकृतियों को बिन्दु वाली रेखाओं पर से पीछे की ओर मोड़ दो।

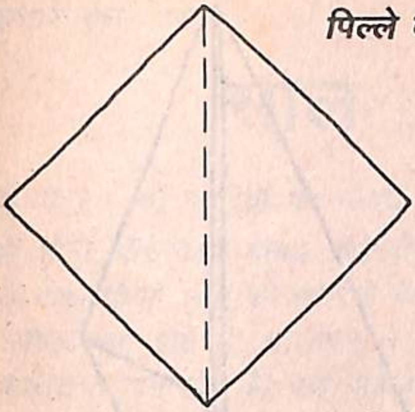


6. इस तरह। अब बिन्दु रेखाओं पर से पीछे की ओर मोड़ बनाओ और आकृति के नीचे की ओर टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

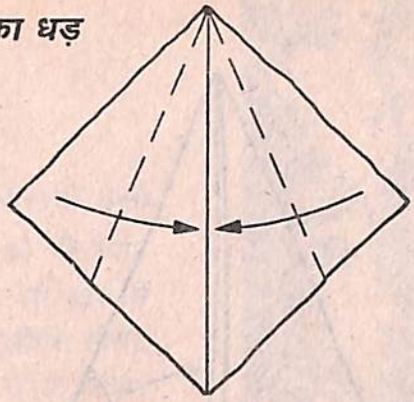


7. इस तरह की आकृति बनेगी। यह सिर वाला हिस्सा हो गया। इसे एक तरफ रख दो।

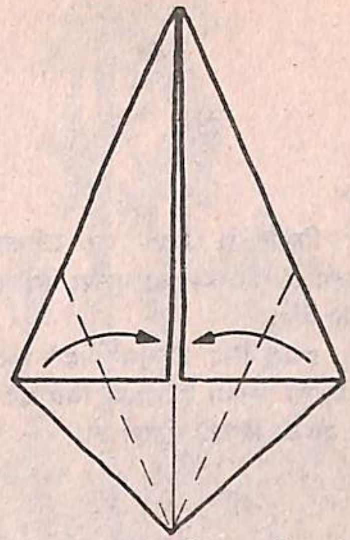
पिल्ले का धड़



1. एक दूसरा वर्गाकार काग़ज़ लो। टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।



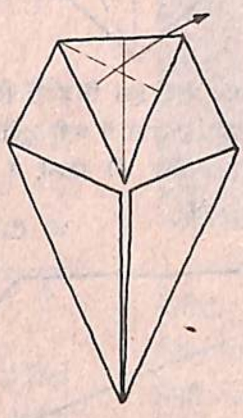
2. टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बनाओ।



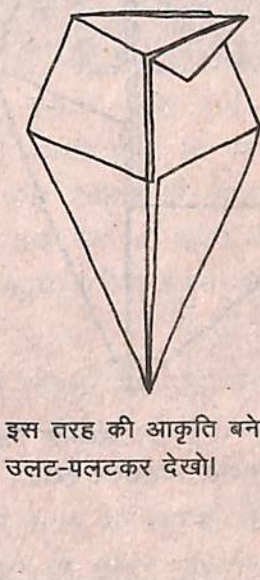
3. इस तरह की आकृति बनेगी। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।



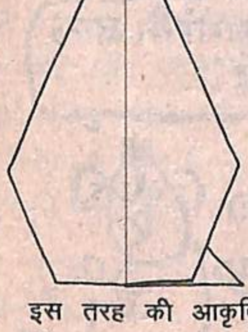
4. इस तरह। अब फिर टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।



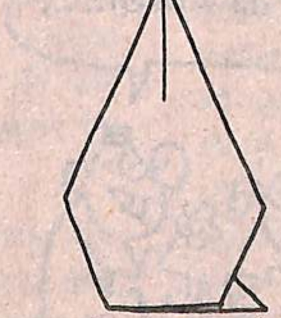
5. मुड़े हुए इस हिस्से को टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



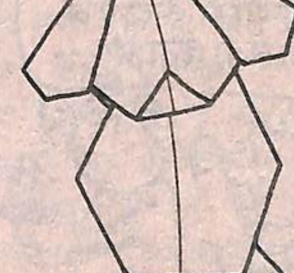
6. इस तरह की आकृति बनेगी। इसे उलट-पलटकर देखो।



7. इस तरह की आकृति दिखेगी। हाँ, यह ठीक है। अब इसके ऊपर सिर वाला हिस्सा जोड़ना है।



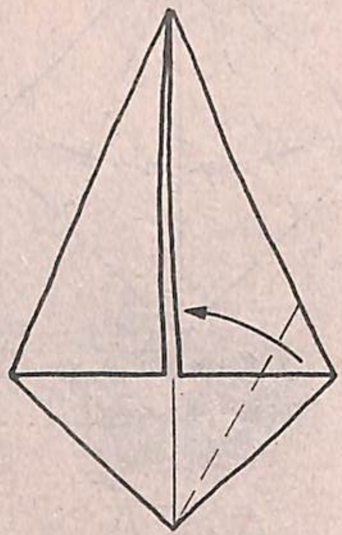
8. इस चित्र में दिखाए तरीके से जोड़ो।



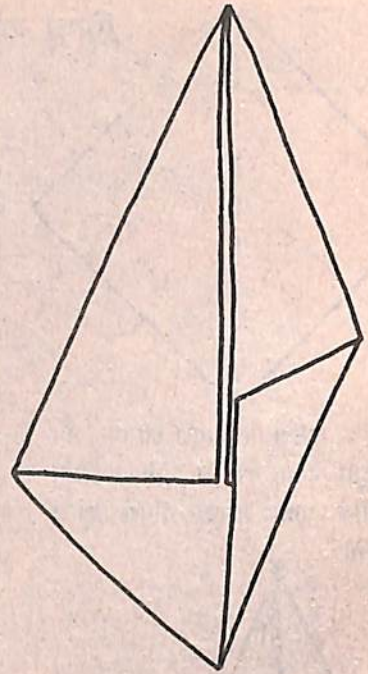
9. इस तरह। देखो क्या बन गया।

पिल्ले के बैठने का तरीका बदलना हो तो धड़ का दूसरा हिस्सा बनाना होगा।

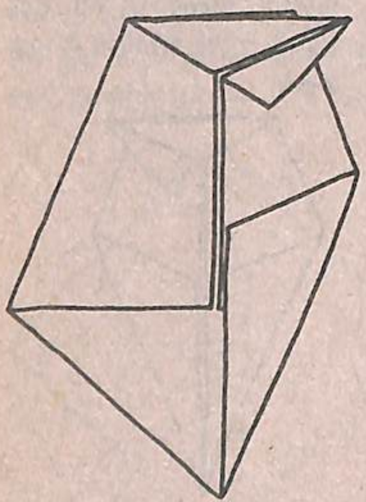
इसके लिए जो तुमने पहले धड़ का हिस्सा बनाया है उसके चित्र एक और दो की क्रियाएँ दोहरा लो।



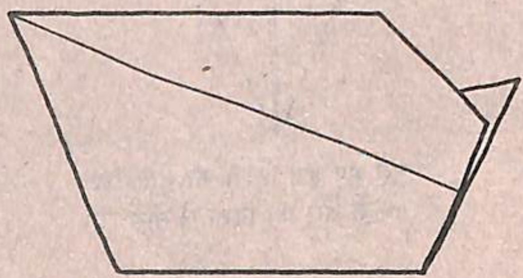
1. उसके बाद इस चित्र में दिखाई दे रही आकृति में बनी टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।



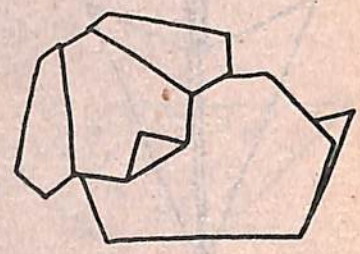
2. इस आकृति पर धड़ एक की चित्र चार और पाँच की क्रियाएँ दोहराओ।



3. इस तरह की आकृति मिलेगी। इसे उलट-पलटकर देखो।



4. जब इस तरह की आकृति बन जाए तो इस पर सिर वाला हिस्सा रखो।



5. यह देखो अब कुछ इस तरह से बैठेगा पिल्ला।



साल



तुमने रेल की पटरियों पर दौड़ती रेल तो देखी ही होगी और कभी शायद पटरियों को भी ध्यान से देखा होगा। लोहे की पटरियों के नीचे आड़े में स्लीपर लगे होते हैं। आजकल ये स्लीपर सीमेंट कंक्रीट के बने होते हैं। एक ज़माने में ये स्लीपर साल की लकड़ी से ही बनते थे। कहीं-कहीं तुम्हें आज भी ये स्लीपर देखने को मिल जाएँगे। उस समय साल की लकड़ी का यह एक महत्वपूर्ण उपयोग था।

साल का पेड़ पतझड़ी वनों में पाया जाता है। लेकिन अन्य वृक्षों की तुलना में साल का पेड़ कभी-कभी ही पत्तियों से खाली होता है। इस पेड़ की कई प्रजातियाँ हैं। कुछ प्रजातियाँ एशिया के अन्य देशों म्यांमार, श्रीलंका तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में भी पाई जाती हैं।

साल आमतौर पर अन्य वृक्षों से अधिक ऊँचाई का होता है। फिर भी इसकी ऊँचाई जंगल की प्राकृतिक अवस्था और जलवायु पर निर्भर करती है। अनुकूल प्राकृतिक स्थितियों में यानी पानी, हवा, मिट्टी ठीक-ठाक हो, तो इसकी ऊँचाई 18 से 30 मीटर तक और तने की मोटाई 1 मीटर तक हो जाती है। विशेष परिस्थितियों में यह पेड़ 45 मीटर तक ऊँचा भी हो सकता है।

साल के पत्ते अण्डाकार होते हैं। लम्बाई 10 से 15 से.मी. और चौड़ाई 5 से 8 से.मी. तक होती है। इसमें फूल गुच्छों में लगते हैं। फूल पीले, छोटे-छोटे और बहुत नाज़ुक होते हैं। साल का फल छोटा, गहरे हरे रंग का होता है। फल अण्डाकार-से होते हैं। जून में ये फल पककर पेड़ से गिरने लगते हैं।

साल के पेड़ की लकड़ी भूरापन लिए सफ़ेद-सी होती है। लकड़ी भारी और मज़बूत होती है। कई दिनों तक पड़ी रहने पर काली पड़ जाती है। पेड़ की छाल गहरे भूरे रंग की होती है।

सामान्यतौर पर इसके लिए गर्म तथा नमीदार जलवायु सबसे अच्छी होती है। साल के लिए गहरी, नमीवाली कुछ रेतीली-सी या पहाड़ी मिट्टी उपयुक्त होती है। इस पेड़ की खेती भी की जाती है। पर उस पर बहुत अधिक ध्यान देने की ज़रूरत होती है।

साल के पेड़ की लकड़ी का कई तरह से उपयोग होता है। मज़बूत बल्लियों, खम्भों के रूप में इसका बहुत-सारी जगह उपयोग होता है। किसी समय तालाबों में साल की लकड़ी के बने खम्भे लगाए जाते थे। इन पर सुन्दर नक़्क़ाशी होती थी। इन खम्भों से पानी के स्तर के बारे में जानकारी मिलती थी। सालों-साल ये खम्भे तालाबों के किनारे पर लगे रहते थे। आज भी कहीं-कहीं देखने को मिल जाते हैं। साल के पेड़ की छाल से एक तरह का गोंद बनाया जाता है। तने से पीले रंग का चिपचिपा पदार्थ निकलता है जो रेज़िन कहलाता है। यह वार्निश के रूप में लकड़ियों को चमकाने के लिए, जूते की पॉलिश, कार्बन पेपर, टाइपराइटर के रिबन आदि बनाने के काम में लाया जाता है।

बात सेहत की

तुम कभी बीमार पड़े हो? भई खाँसी-ज़ुकाम, नज़ला-बुखार, पेटदर्द कभी कुछ तो हुआ होगा कि नहीं? तो जब यूँ परेशानी आन पड़ती है तो क्या करते हो? तुम में से कुछ तो शायद अम्मा या दादी-नानी के बताए घरेलू नुस्खों से ही अपना इलाज कर लेते होगे। पर कभी-कभी तो ऐसी भी ज़रूरत आ टपकती है कि अस्पताल जाना पड़े। सेहत हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। क्यों न इस बार हम सर्वे में अपने और अपने पास-पड़ोस के लोगों की सेहत की खोज-खबर लें?

यह सर्वे दो तरह से किया जा सकता है। एक तरीक़ा यह हो सकता है कि तुम घर-घर जाकर लोगों से उनकी सेहत की स्थितियों की जानकारी लो। अगर किसी घर में कोई बीमार हो तो उसके इलाज-देखभाल आदि के बारे में घर के अन्य लोगों से पूछो। या दूसरा तरीक़ा यह हो सकता है कि तुम पास के स्वास्थ्य केन्द्र (सरकारी अस्पताल) जाकर डॉक्टर, नर्स या स्वास्थ्य अधिकारी से इजाज़त लेकर वहीं यह सर्वे करो। स्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर से मिलने के लिए बैठे या दवा की खिड़की की लाइन में खड़े मरीज़ों से पूछताछ करके कई जानकारियाँ इकट्ठी की जा सकती हैं।

हाँ, घर जाओ या स्वास्थ्य केन्द्र, इतना याद रखना कि कोई बहुत बीमार हो तो सवाल-जवाब करके उसे परेशान मत करना। और अगर कोई ठीक-ठाक दिखने वाला व्यक्ति भी तुम्हारे सवालों का जवाब देने से इन्कार करे तो उस पर ज़्यादा दबाव मत डालना। बीमार व्यक्ति खुद या उसके दोस्त-रिश्तेदार इस विपदा की वजह से ही काफ़ी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में तुम्हारा सर्वे उन्हें बेतुका और ग़ैर ज़रूरी लग सकता है। यह भी हो सकता है कि परेशान व्यक्ति तुम्हें टालने के लिए कुछ भी जवाब दे दे। पर ठीक-से सर्वे करना है तो तुम्हें तो अपने सवालों के सबसे सही उत्तर इकट्ठे करने होंगे।

सर्वे में सवाल पूछते समय एक और बात का ध्यान रखना चाहिए। सवाल कभी भी ऐसे न हों, जिनमें जवाब छुपे हों। मसलन मान लो तुम जानना चाहते हो कि पड़ोस की चाची के घर में जब कोई बीमार पड़ता है तो घर के लोग क्या करते हैं? बीमार को कहाँ ले जाते हैं? क्या वे स्वास्थ्य केन्द्र जाते हैं? महीने में कितनी बार जाते हैं? इस जानकारी के लिए तुम दो तरह से सवाल पूछ सकते हो -

पहला :

1. जब कोई बीमार होता है तो आप उसे कहाँ ले जाते हैं?
2. एक महीने में लगभग कितनी बार स्वास्थ्य केन्द्र जाना पड़ता है?

दूसरा :

1. जब कोई बीमार होता है तो आप उसे लेकर स्वास्थ्य केन्द्र तो जाते ही होंगे?
2. महीने में लगभग कितनी बार जाते हैं - एक-दो बार, चार-पाँच बार या और ज़्यादा?

यूँ ऊपरी तौर पर देखें तो इन सवालों से जिस जवाब की तुम्हें अपेक्षा है, वह मिल ही जाएगा। पर पहले तरीक़े से सवालों को पूछने पर सामने वाला सोचकर सही स्थिति के अनुसार जवाब देगा। जबकि दूसरे तरीक़े के सवालों के जवाब में ज़्यादा सम्भावना यही रहती है कि वह बिना सोचे तुम्हारे सुझाए गए विकल्पों में से किसी एक पर हाँ कह देगा।

सर्वे करने के लिए तुम अपने गाँव के सारे मोहल्लों या टोलों में से कुछ घर चुन लो। जैसे मान लो हर टोले में 10-15 घर हैं और कुल 6 टोले हैं, तो तुम हर टोले से 3-4 घर चुन लो। ये घर कोई भी हो सकते हैं।

अब एक नज़र सवालों की सूची पर भी। हो सकता है तुम भी कुछ नए सुझाव दे दो।

1. घर की पहचान
2. कितने सदस्य हैं?
   वयस्क - बच्चे -
3. क्या इस वक्त कोई बीमार है?
4. यदि हाँ तो कौन?
   नाम - उम्र -
   बीमारी का ब्यौरा -
5. बीमार/बीमारी कब से है?
6. इलाज के लिए क्या किया?
   घरेलू/वैद्य/स्वास्थ्य केन्द्र/प्रायवेट/अन्य कोई
7. क्या घर में किसी और को भी यह बीमारी है?
8. यदि हाँ तो किसे?
   (नाम, उम्र तथा बीमार से रिश्ते का ब्यौरा लिखो।)
9. बीमार या बीमारों को लेकर कितनी बार डॉक्टर/वैद्य से मिलना पड़ा?
   (नोट : अगर घर में एक से ज़्यादा बीमार हों तो प्रश्न 4 से 9 (केवल 8 छोड़कर) हर बीमार के लिए भरना होगा। अगर कोई बीमार न हो तो इन सवालों को छोड़कर आगे बढ़ो।)
10. आखिरी बार घर में कौन बीमार पड़ा था?
   नाम - उम्र -
   बीमारी का ब्यौरा-
11. इलाज करवाया था?
12. यदि हाँ तो क्या?
13. दवा कहाँ से लाते हैं? सरकारी दवाखाने या अन्य कहीं से? (अन्य क्या?)
14. क्या सभी दवाएँ सरकारी दवाखाने में मिल जाती हैं?
15. क्या डॉक्टरों का व्यवहार और इलाज संतोषजनक लगता है? क्यों या क्यों नहीं?

अब इसमें तुम आगे और प्रश्न अपने माहौल, परिस्थितियों के हिसाब से जोड़ लो। इस तरह से इकट्ठी की गई जानकारी को मिलाकर देखने पर तुम अपने इलाके के/गाँव के लोगों के स्वास्थ्य का एक मोटा-मोटा, हल्का-सा अंदाज़ लगा सकते हो। हल्का-सा अंदाज़ इसलिए कि अभी तुमने एक ही दिन की जानकारी बटोरी है। इस अंदाज़ को और पुख्ता करने के लिए तुम्हें सर्वे को और फैलाना होगा - महीने भर में या उससे भी ज़्यादा। घबराओ मत, हमारा मतलब यह नहीं कि महीने भर तक हर रोज़ यह सर्वे करो। तुम चाहो तो हफ़्ते में एक-या दो दिन जानकारी इकट्ठी कर सकते हो। महीने भर तक या उससे ज़्यादा समय, हर हफ़्ते उस दिन यह सर्वे करो। साथ ही तुम्हें शायद सवालों में भी कुछ फेरबदल करना पड़े।

अब जानकारी तो इकट्ठी हो गई। एक तो इस जानकारी से तुम यह पता लगा सकते हो कि मौसम के बदलाव के समय या अलग-अलग मौसम में कौन-कौन सी बीमारियाँ फैलती हैं लोगों में। दूसरा, अगर काफी कम या काफ़ी ज़्यादा उम्र के लोगों का खास ध्यान रखकर सर्वे किया जाए तो हम इन उम्र के लोगों की खास परेशानियों का पता लगा सकते हैं। साथ ही स्वास्थ्य केन्द्र की सुविधा हमारे गाँव या इलाक़े में ठीक-ठाक चल रही है कि नहीं, लोगों की ज़रूरतों के हिसाब से पर्याप्त है कि नहीं, यह भी इससे काफ़ी हद तक पता लगाया जा सकता है।

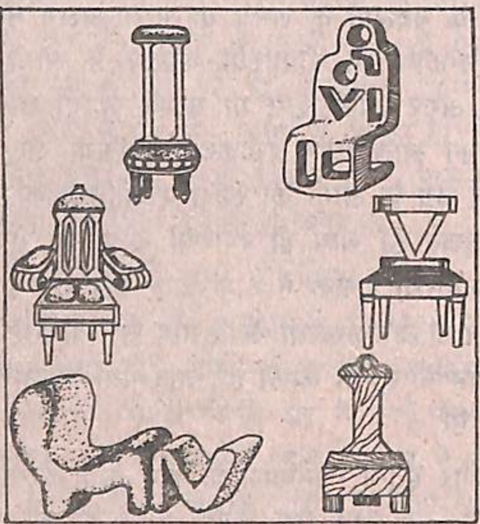
और इतनी जानकारी के बाद क्या करना है, यह तुम सब खुद तय करो। चाहो तो घर बैठ जाओ। चाहो तो अपर्याप्त सुविधाओं को पर्याप्त बनाने के लिए या पर्याप्त को और बेहतर बनाने के लिए क्या किया जा सकता है, इसकी चर्चा अपने दोस्तों की टोली में करो। वैसे तो तुम मिलकर बहुत-कुछ कर सकते हो अपने गाँव या मोहल्ले के स्वास्थ्य केन्द्र में अच्छी स्वास्थ्य सेवा बहाल करने के लिए। साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखना, स्वास्थ्य के बारे में प्रचलित ग़लत मान्यताओं को दूर करना, सही व्यवस्था नहीं हो तो उसके लिए माँग करना और जद्दोजेहद करके उसे हासिल करना, आदि। पर कहीं-कहीं, इस सबमें तुम्हें बड़ों की मदद भी लेनी पड़ सकती है। ऐसी ज़रूरत आ जाए तो वह भी ले लो।

और तुमने क्या-क्या किया, और उससे क्या-क्या जाना, यह हमें ज़रूर लिखना। हमने सोचा है कि जो पाठक अपने सर्वे का ब्यौरा हमें भेजेंगे उसे हम चकमक में छापेंगे। तो जुट जाओ सर्वे करने में और इकट्ठी की गई जानकारी हमें भेज दो। □□□



माथापच्ची

(1)



ये एक ही राज्य के अलग-अलग समय के सम्राटों के सिंहासन हैं। इन्हें अगर ग़ौर से देखें तो यह पता किया जा सकता है कि ये किस क्रम में बनाए गए थे। देखो और बताओ।

(2)

एक रात अचानक बत्ती गुल हो जाने पर अम्मी ने दो मोमबत्तियाँ जलाईं। एक रसोई में जहाँ वे खाना पका रही थीं और दूसरी वहाँ, जहाँ हम लोग पढ़ने बैठे थे। हमने अम्मी से कहा, 'ये तो छोटी-सी मोमबत्ती है और हमें देर तक पढ़ना है।'

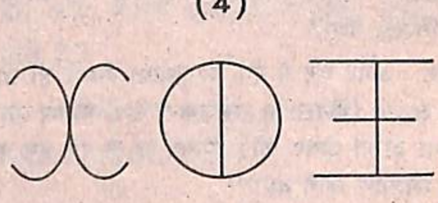
अम्मी बोली, 'ये छोटी दिखने वाली मोमबत्ती लगातार 6 घण्टे तक जलती रह सकती है। और रसोई वाली 4 घण्टे तक।'

कुछ समय बाद मैं पानी पीने रसोई में गई तो देखा कि रसोई वाली मोमबत्ती, हमारे कमरे वाली मोमबत्ती की तुलना में आधी ऊँचाई की ही रह गई थी। लगभग कितनी देर से जल रही होंगी दोनों?

(3)

नानू के घर उसके दादा के जमाने की एक घड़ी है। उम्र के साथ-साथ वह कुछ सुस्त हो गई है। आजकल वह हर घण्टे में 4 मिनट पीछे हो जाती है। नानू ने अब से ठीक साढ़े तीन घण्टे पहले उसमें सही समय मिलाया था। और अब दोपहर के 12 बज रहे हैं। तुम बता सकते हो अब से कितनी देर बाद पुरानी घड़ी बारह बजाएगी?

(4)



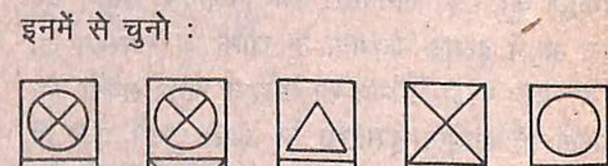
ये चित्र एक खास क्रम में लगे हैं। तुम्हें इनकी अगली कड़ी ढूँढनी है। मदद के लिए इतना बता दें कि इनका सम्बंध अंग्रेज़ी वर्णमाला से है।

(5)



यहाँ कुछ चित्रों की एक अधूरी शृंखला दी हुई है। नीचे दिए अन्य चित्रों में से एक चित्र जोड़ने पर यह शृंखला पूरी हो जाएगी। कौन-सा चित्र है वह?

इनमें से चुनो :



(a) (b) (c) (d) (e)

लाल	1	2	3	4
हरा	1	2	3	4
काला	1	2	3	4
सफेद	1	2	3	4

ल 1	क 1	स 1	ह 1
ह 2	स 2	क 2	ल 2
क 3	ल 3	ह 3	स 3
स 4	ह 4	ल 4	क 4

सोलह चौकोर गत्ते के टुकड़े काट लो। सभी एक ही नाप के हों। चार को लाल रंग में रंग लो, चार को हरे, चार को काले और बाकी चार को सफ़ेद। अब चारों लाल चौकोरों को क्रमशः 1 से 4 तक के नम्बर दे दो। इसी तरह अन्य रंगों के चौकोरों को भी।

अब असली मसला - इन सोलह चौकोरों को ऐसे जमाना है कि बड़े चतुर्भुज की हर आड़ी और खड़ी भुजा और दोनों मुख्य कर्णों में चारों रंग मौजूद हों। एक हल हम यहाँ दे रहे हैं - उदाहरण के तौर पर। और भी कई हल हो सकते हैं, जो तुम्हें ढूँढने हैं। ढूँढकर देखो कुल कितने हल हैं इस सवाल के।

वर्ग पहेली-45

1	2	■	3	4		5	
■	6				■		■
7		■		■	8		9
	■	10	■	11		■	
	■	12		■		■	
13	14		■	15	■	16	
■		■	17				■
18					■	19	

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. छुट्टी के दिन के बाद काम का दिन (2)
3. चूड़ी बेचने वाली (5)
6. माँ के पिता का राज (4)
7. धनिया (2)
8. ज़ेवर बनाने वाला (3)
11. राह ही में मिलेगा रत्न (2)
12. केतु का जोड़ीदार (2)
13. मकर में काम (3)
16. अलाउद्दीन के चिराग़ में रहने वाला... (2)
17. गज भर के मग में है चमक-दमक (4)
18. एक भाषा जिसका नाम उल्टा-सीधा एक समान है (5)
19. एक प्राचीन वाहन (2)

संकेत : ऊपर से नीचे

2. मोहित करना, रूठे को....(3)
3. राम ठीकरी में एक भाषा (3)
4. स्वयं का (2)
5. क्रोधित होना (3)
7. दिल की धड़कन (4)
8. एक बर्तन जिसकी उपमा गर्दन के लिए दी जाती है (3)
9. रहम करने वाला (4)
10. हमराज में आराम का उल्टा (3)
14. रसीला
15. ताश का बारहवाँ पत्ता (3)
16. जो धड़कता है (3)
17. जिसके बिना सब सून (2)

दीप आर्य, धार द्वारा भेजी पहेली पर आधारित।

❑ सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग-पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों, उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली - 45 का हल जुलाई, 95 में देखें।।

हैण्डपम्प

खुला कुआँ, बावड़ी, नदी और हैण्डपम्प, तुम्हारे पास चार जगह का पानी है। तुम कौन-सा पानी पीना चाहोगे? हो सकता है तुम्हारा उत्तर हैण्डपम्प हो। क्योंकि तुमने भी सुना होगा कि इसका पानी साफ़ होता है।

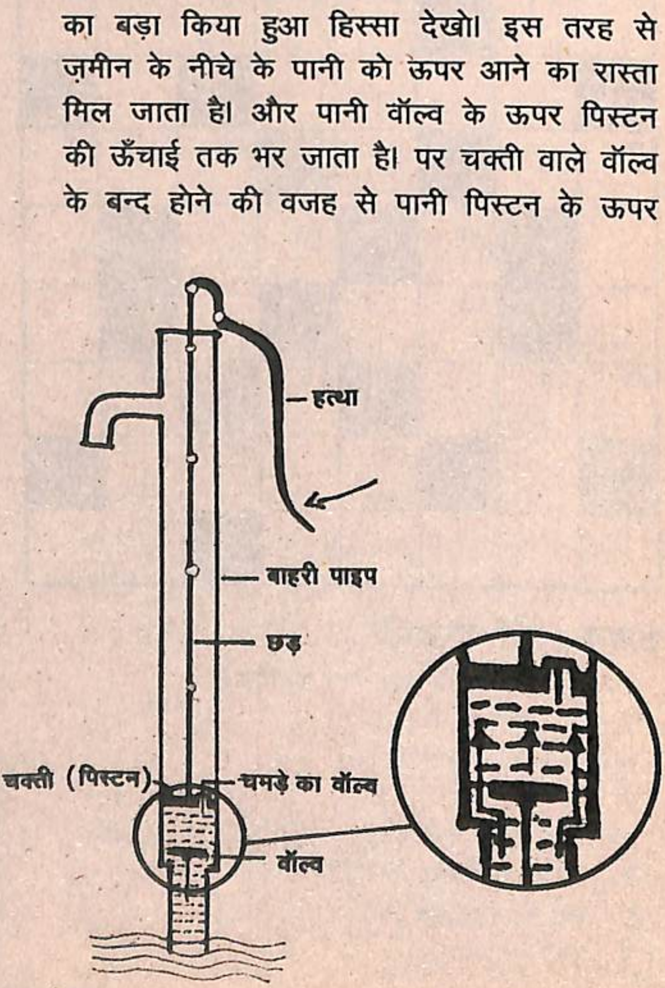
सिर्फ़ लोहे के एक हत्थे को बिना ख़ास दम लगाए ऊपर-नीचे करके ज़मीन की गहराई से पानी निकाल लेना अपने आप में हैरत की बात है। पर इसके काम करने के तरीके की सरलता शायद इस हैरत को कम कर सके। आओ देखें हैण्डपम्प काम कैसे करता है।

हैण्डपम्प, बाहर से देखने पर ज़मीन में गड़ा एक लोहे का गोल पाइप भर है। जिसके एक तरफ नल की तरह मुड़ा पाइप और दूसरी तरफ लोहे का एक हत्था होता है। इस हत्थे का एक सिरा लोहे की पतली छड़ से जुड़ता है। बाहर से यह छड़ मोटे पाइप में जाती दिखती है।

अब हैण्डपम्प के अन्दर झाँकें। साथ के चित्र को देखते चलो। पाइप के अन्दर इस लोहे की छड़ के सिरे पर लोहे की ही एक गोल चक्ती होती है। इस चक्ती पर चमड़े का वॉल्व लगा होता है। यह चक्ती लगी छड़ पाइप के अन्दर पिस्टन की तरह काम करती है। वॉल्व काम कैसे करते हैं इसे कुछ यूँ समझा जा सकता है। यह एक तरफ खुलने वाला दरवाज़ा है। इसके एक तरफ दबाव बढ़ाया जाए तो दरवाज़ा खुल जाता है और दूसरी तरफ चाहे जितना दबाव बढ़ाया जाए दरवाज़ा बन्द ही रहता है, खुलता नहीं है।

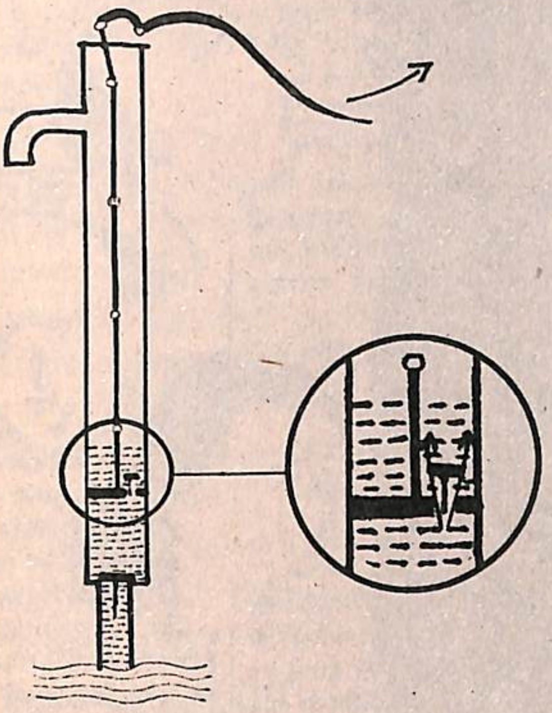
ज़मीन में गड़ा पाइप अन्दर जाकर कुछ पतला हो जाता है। जहाँ यह पतला होता है वहाँ भी एक वॉल्व होता है। इस पतले पाइप का निचला सिरा ज़मीन के अन्दर पानी में डूबा रहता है। यह तो हो गए हैण्डपम्प के मुख्य हिस्से। अब इनका काम देखते हैं।

हैण्डपम्प के हत्थे को नीचे ले जाने पर पाइप में पिस्टन अपनी जगह से ऊपर की तरफ उठता है। इससे नीचे के वॉल्व और पिस्टन के बीच कम दाब की स्थिति पैदा हो जाती है और चक्ती के ऊपर और वॉल्व के नीचे का दाब इस की तुलना में ज़्यादा हो जाता है। ज़्यादा दाब का क्षेत्र हर तरफ दबाव डालता है। इससे चक्ती का वॉल्व अपनी जगह पर ही अटका रहता है और नीचे का वॉल्व ऊपर की तरफ उठ जाता है। नीचे के चित्र का बड़ा किया हुआ हिस्सा देखो। इस तरह से ज़मीन के नीचे के पानी को ऊपर आने का रास्ता मिल जाता है। और पानी वॉल्व के ऊपर पिस्टन की ऊँचाई तक भर जाता है। पर चक्ती वाले वॉल्व के बन्द होने की वजह से पानी पिस्टन के ऊपर



नहीं चढ़ पाता है।

अब हैण्डपम्प के हत्थे को ऊपर करने पर पिस्टन नीचे की तरफ हो जाता है। जो पिस्टन और नीचे के वॉल्व के बीच अधिक दाब की स्थिति पैदा कर देता है। यह दाब पिस्टन के ऊपर और निचले वॉल्व के नीचे के दाब से ज़्यादा होता है।



पर निचले वॉल्व के नीचे पाइप संकरा होने के कारण बढ़े हुए दाब के बावजूद वॉल्व वहीं अटका रहता है। साथ ही यह दाब पिस्टन के वॉल्व को ऊपर की ओर धकेल देता है। वॉल्व ऊपर की तरफ उठ जाता है। इससे पानी पिस्टन के ऊपर चढ़ आता है। इसे तुम ऊपर वाले चित्र को देखकर समझ सकते हो। बार-बार हत्थे को ऊपर नीचे करने पर पाइप में पानी धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगता है और बाहर वाले नल से बाहर आ जाता है।

यह तो हुई अधूरी कहानी एक विशेष क़िस्म के पम्प की। इसके अलावा भी कई तरह के पम्प होते हैं। कुछ में पिस्टन की जगह लचीला डायफ्राम होता है जो एक छड़ी के सहारे ऊपर नीचे होता है। पम्प कोई भी हो सबका काम एक सरीखा होता है - तरल पदार्थ या गैस को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ऐसे सभी पम्पों का सिद्धान्त भी एक सा होता है - दाब का फ़र्क पैदा करके तरल पदार्थ को आगे बढ़ाना।

ऊपर लिखे 'अधूरे' शब्द में शायद तुम अटके होगे। अधूरी कहानी इसलिए क्योंकि वो सब बातें तो थीं चालू पम्प की। पर अपने आस-पास तो पम्प अक़्सर बन्द पड़े ही नज़र आते हैं।

पम्प को दो-तीन तरह की बीमारियाँ अक़्सर घेरे रहती हैं-

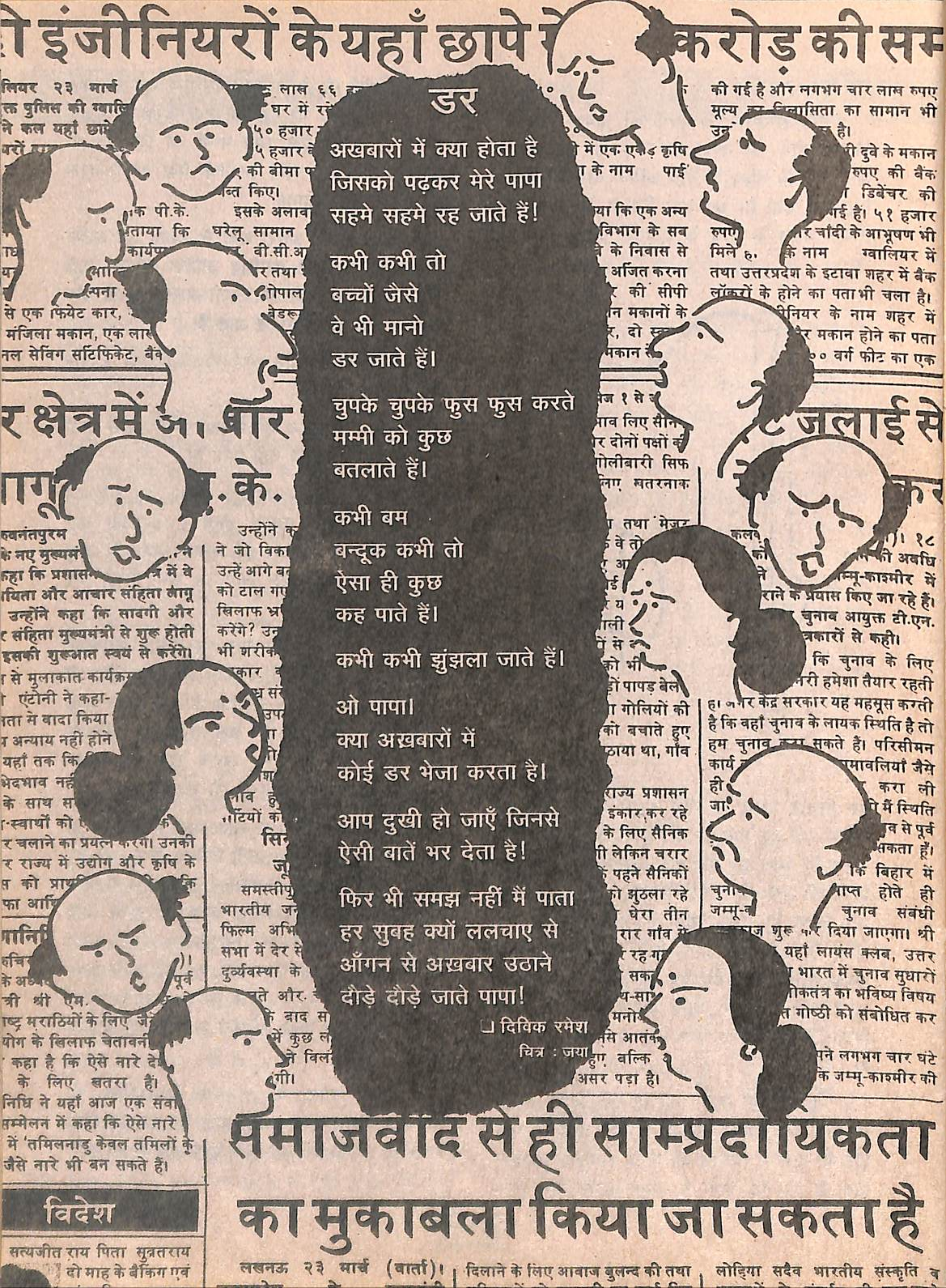
- पिस्टन के वॉल्व का खराब होना। इससे पानी पाइप में चढ़ ही नहीं पाता है।
- पिस्टन की छड़ का टूट जाना। इस छड़ की लम्बाई बहुत ज्यादा होती है इसलिए कई हिस्सों को जोड़कर इसे बनाया जाता है। कोई एक भी जोड़ खुल जाने पर सभी हिस्से गिर जाते हैं।

यह पम्प की बहुत आम पर गम्भीर बीमारीयाँ हैं। पम्प ठीक करने की तालीम ले चुका कोई भी व्यक्ति इन्हें ठीक कर सकता है। आजकल कई जगहों पर महिलाओं को इस तरह का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पम्प ख़राब होने पर मुख्य परेशानी भी तो आख़िर इन्हीं को उठानी पड़ती है।

वैसे तो हैण्डपम्प से साफ़ पानी ही मिलता है। पर कुछ पम्पों पर "यह पानी पीने के लिए नहीं है" लिखा दिख जाएगा। दरअसल कुछ पम्प में कम गहराई पर ही पानी मिल जाता है। इनमें गंदी नालियों का पानी रिसकर मिलने का ख़तरा रहता है। ऐसे पम्प का पानी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। हाँ पम्प के पास बैठकर कपड़े धोना, नहाना भी उसके पानी को पीने लायक नहीं छोड़ता है।

तुम्हारे गाँव या घर के आस-पास भी हैण्डपम्प होगा। उसके क्या हाल हैं? उसका पानी साफ़ रहे इसके लिए क्या तुम कुछ कर सकते हो?

❑ शशि सबलोक



डर

अखबारों में क्या होता है
जिसको पढ़कर मेरे पापा
सहमे सहमे रह जाते हैं!

कभी कभी तो
बच्चों जैसे
वे भी मानो
डर जाते हैं।

चुपके चुपके फुस फुस करते
मम्मी को कुछ
बतलाते हैं।

कभी बम
बन्दूक कभी तो
ऐसा ही कुछ
कह पाते हैं।

कभी कभी झुंझला जाते हैं।

ओ पापा।
क्या अख़बारों में
कोई डर भेजा करता है।

आप दुखी हो जाएँ जिनसे
ऐसी बातें भर देता है!

फिर भी समझ नहीं मैं पाता
हर सुबह क्यों ललचाए से
आँगन से अख़बार उठाने
दौड़े दौड़े जाते पापा!

❑ दिविक रमेश

चित्र : जया

मनुष्य महाबली कैसे बना!

दो क़ानून

ऐसा अक़्सर हुआ है कि समुद्रों को पार करने वाले खोजियों ने नए देशों की ही नहीं, बल्कि इतिहास में ऐसे युगों की भी खोज की है, जिन्हें कभी का भुलाया जा चुका था।

जब यूरोपवासियों ने ऑस्ट्रेलिया की खोज की, तो यह एक महान विजय थी, क्योंकि उन्होंने एक पूरे-के-पूरे महाद्वीप को खोज लिया था।

लेकिन उनकी खोज ऑस्ट्रेलियावासियों के लिए एक बड़ा दुर्भाग्य था। मानव-इतिहास के पंचांग के अनुसार वे अभी तक एक और ही युग में रह रहे थे। वे यूरोपीय परम्पराओं और तौर-तरीक़ों के आगे झुकना नहीं चाहते थे। उनको उनके इस 'अपराध' के लिए क्षमा नहीं किया गया और जंगली जानवरों की तरह उन्हें खदेड़ा और परेशान किया गया। ऑस्ट्रेलियावासी जबकि तम्बुओं में ही रह रहे थे, यूरोप के नगरों में बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो रही थीं। ऑस्ट्रेलियावासी निजी सम्पत्ति का मतलब भी नहीं जानते थे, जबकि यूरोप में अगर कोई आदमी, किसी धनी ज़मींदार के जंगल में एक हिरन को भी मार देता, तो उसे जेल में ठूँस दिया जाता था।

ऑस्ट्रेलियावासियों के लिए जो क़ानून था, वह यूरोपियों के लिए एक अपराध था।

यूरोपीय फ़ार्मस्वामी भेड़ों को अपनी निजी सम्पत्ति समझता था, जबकि आदिम ऑस्ट्रेलियाई शिकारी के लिए यह सौभाग्य से मिला शिकार होता था। 'भेड़ उस फ़ार्मस्वामी की है, जिसने उसे ख़रीदा है या पाला है', यह यूरोपियों का क़ानून था। 'जानवर उस शिकारी का है, जिसने उसे पकड़ा', यह ऑस्ट्रेलियावासियों का क़ानून था।

और क्योंकि ऑस्ट्रेलियावासी अपने ज़माने के क़ानून का पालन करते थे, इसलिए यूरोपीय उन्हें इस तरह गोली से उड़ा दिया करते थे, मानो वे मनुष्य नहीं, भेड़ों के बाड़े में घुस आने वाले भेड़िये हों।

इन दोनों क़ानूनों की तब फिर टक्कर होती, जब ऑस्ट्रेलियावासी औरतें आलू के किसी खेत पर पहुँच जातीं। क्षण भर की भी झिझक के बिना वे इन स्वादिष्ट कन्दों को खोदने लग जातीं। और इसमें आश्चर्य की क्या बात थी - यहाँ इतने सारे खाने योग्य कन्द थे, और सो भी एक ही जगह! जितने कन्द यहाँ वे एक घण्टे के भीतर चुन सकती थीं, उतने वे महीने भर में भी नहीं चुन सकती थीं।



लेकिन उनका आकस्मिक सौभाग्य ही उनका दुर्भाग्य था। गोलियाँ छूटने लगतीं और औरतें इस बात को कभी समझ पाए बिना अपने बोझों सहित ज़मीन पर गिरने लगतीं कि किसने उनकी जान ली है और किसलिए।

अमरीका की खोज के बाद भी इन दोनों दुनियाओं के बीच ठीक ऐसी ही लड़ाई हुई।

पुरानी दुनिया बनाम नई दुनिया

अमरीका की खोज करनेवाले यूरोपियों ने समझा कि उन्होंने एक नई दुनिया ढूँढ ली है।

लेकिन यह 'नई दुनिया' असल में एक पुरानी दुनिया थी। यूरोपियों ने अमरीका में अनजाने ही खुद अपने अतीत को खोज लिया था, जिसे वे कब का भूल चुके थे।

उनका ख़याल था कि अमरीकी आदिवासियों के रीति-रिवाज़ जंगली और अजीब हैं। आदिवासियों के घरों, पोशाकों और तौर-तरीक़ों की उनके घरों, पोशाकों और तौर-तरीक़ों से तनिक भी समानता न थी।

उत्तर के आदिवासी अपनी गदाएँ और अपने बाणों के फल चकमक और हड्डी के बनाया करते थे। वे लोहे के बारे में कुछ भी न जानते थे। पर वे कृषि से परिचित थे - वे मक्का, कद्दू, सेम और तम्बाकू बोते थे। उनका मुख्य उद्यम शिकार था। वे लकड़ी के घरों में रहते थे और अपने गाँवों को ऊँचे-ऊँचे कटहरों से घेर लेते थे।



दक्षिण की तरफ़, मेक्सिको में, आदिवासियों के पास ताँबे के औज़ार और सोने के गहने थे, उनके कच्ची ईंटों के बड़े-बड़े मकान थे। अमरीका की खोज करने वाले यूरोपियों और व्यापारियों ने अपनी डायरियों में इन सब बातों का बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है। लेकिन वस्तुओं का वर्णन करना जीवन की प्रणाली का वर्णन करने से आसान है।

अमरीका में जीवन के जो तौर-तरीक़े थे, वे यूरोपियों के लिए अजीब थे, वे इसे नहीं समझ सकते थे और उन्होंने इसके जो वर्णन किए हैं, वे बड़े अस्पष्ट और भ्रांतिपूर्ण हैं।

'नई दुनिया' मुद्राहीन, व्यापारीहीन और अमीर-ग़रीब विहीन आदिवासी क़बीले थे, जो सोने की चीज़ें बनाना जानते थे, लेकिन सोने का महत्व वे नहीं जानते थे।



कोलम्बस के जहाज़ियों ने जिन पहले आदिवासियों को देखा, उनकी नाक में सोने के तार और गले में सोने के हार थे। लेकिन

उन्होंने इन गहनों को काँच के मनकों और सस्ते सजावटी ज़ेवरों से खुशी-खुशी बदल लिया।

समुद्र पार से आने वाले ये अजनबी जानते थे कि दुनिया में सभी लोग मालिकों और चाकरों, ज़मींदारों और किसानों में बँटे हुए हैं, लेकिन यहाँ सभी लोग बराबर थे। जब कोई क़बीला किसी दुश्मन को क़ैद कर लेता, तो वह उसे ग़ुलाम या नौकर नहीं बनाता था। वह या तो उसे तुरन्त मार देता था, या उसे गोद ले लेता था।

यहाँ किसी के पास कोई महल, मकान या जायदाद न थी। लोग सामूहिक आवासों में रहा करते थे, जिन्हें वे 'लम्बे घर' कहते थे। पूरे-के-पूरे कुल एक साथ रहते थे और विशाल परिवार के लिए सभी समान रूप से उत्तरदायी थे। ज़मीन किसी एक आदमी की नहीं, बल्कि पूरे क़बीले की थी। मालिक के लिए उसकी ज़मीन पर काम करने वाले ग़ुलाम नहीं थे। यहाँ सभी लोग आज़ाद थे।

सामन्ती युग में (जिसमें ग़ुलाम रखना कानूनी था) रहने वाले यूरोपियों को चकराने के लिए यही काफ़ी था।

यूरोप में हर कोई जानता था कि अगर उसने किसी और की चीज़ को ले लिया, तो शहर कोतवाल उसका गिरेबान पकड़कर उसे जेल घसीटकर ले जाएगा। लेकिन यहाँ न कोतवाल था, न निजी सम्पत्ति और न क़ैदख़ाने ही थे। इसके बावजूद यहाँ सभी चीज़ों में व्यवस्था थी। लोग इस व्यवस्था को क़ायम रखते थे, यद्यपि यूरोप की अपेक्षा भिन्न तरीक़े से।

यूरोप में क़ानून इस तरह से बने हुए थे कि इनसे यह सुनिश्चित होता था कि ग़रीब कभी अमीर की किसी चीज़ को न लें, कि नौकर सदा अपने मालिकों की आज्ञा मानें, कि ग़ुलाम ज़िन्दगी भर अपने ज़मींदारों के लिए काम करते रहें। जबकि यहाँ हर आदमी की रक्षा उसका परिवार और उसका क़बीला करता था। अगर कोई आदमी मारा जाता, तो पूरा कुल उसका बदला लेता। अगर हत्यारे के सम्बंधी मरे हुए आदमी के सम्बंधियों से क्षमा याचना कर लेते और उनके पास सुलह की सौग़ातें लेकर आते, तो हत्या का अन्त शान्तिमय हो सकता था।

यूरोप में राजा, महाराजा और राजकुमार थे। मगर यहाँ न राजा थे, न राज-सिंहासन। सरदारों की परिषद सारे क़बीले की मौजूदगी में क़बीले के सभी मामले तय करती थी। सरदारों को उनकी योग्यताओं के कारण चुना जाता था और अगर वे काम चलाने के योग्य सिद्ध न होते, तो उन्हें पद से हटा दिया जाता था। सरदार क़बीले का स्वामी नहीं होता था। कुछ आदिवासी भाषाओं में 'सरदार' शब्द का अर्थ मात्र 'वक्ता' था।

पुरानी दुनिया में राष्ट्र का प्रमुख राजा और परिवार का प्रमुख पिता होता था। राज्य मनुष्य का सबसे बड़ा और परिवार सबसे छोटा समुदाय था। राजा अपनी प्रजा का न्याय करता और उसे दण्ड देता था। पिता अपने बच्चों का न्याय करता और उन्हें दण्ड देता था। राजा अपने बाद देश अपने बेटे को देता था, पिता अपने बाद अपनी जायदाद अपने पुत्र को दे जाता था।

लेकिन यहाँ, 'नई' दुनिया में, बाप की अपने बच्चों पर कोई सत्ता न थी। बच्चे माँ के होते थे और उसी के पास रहते थे। 'लम्बे घर' में सारी व्यवस्था स्त्रियों के ही हाथ में होती थी। यूरोपीय परिवारों में बेटे घर पर रहते थे, जबकि बेटियाँ अपने पतियों के साथ जाकर रहती थीं। यहाँ इसका उलटा होता था - पत्नी अपने पति को अपनी माँ के घर लेकर आती थी। और पत्नी ही परिवार की प्रमुख होती थी।

एक खोजी ने लिखा था :

'औरतें ही आमतौर पर घर की व्यवस्था करती थीं और वे सदा एक-दूसरे का साथ देती थीं। वे अपने सामान को साझे में रखती थीं। मगर उस अभागे पति की शामत थी कि जो ज़्यादा नहीं जुटा पाता था। घर में उसकी चाहे कितनी ही चीज़ें और बच्चे क्यों न हों, उसे मिनट भर में अपना बोरिया-बिस्तर समेटकर निकल जाने को कहा जा सकता था। और अगर कहीं वह इसका विरोध करने की कोशिश करता, तब तो उसकी ख़ैर नहीं थी। उसका जीना जंजाल हो जाता था। औरतों को तब बड़ी सत्ता प्राप्त थी।

पुरानी दुनिया में औरत अपने पति की सेविका होती थी। लेकिन आदिवासी क़बीलों में औरत परिवार की प्रमुख होती थी। कभी-कभी तो वह क़बीले तक की प्रमुख होती थी।

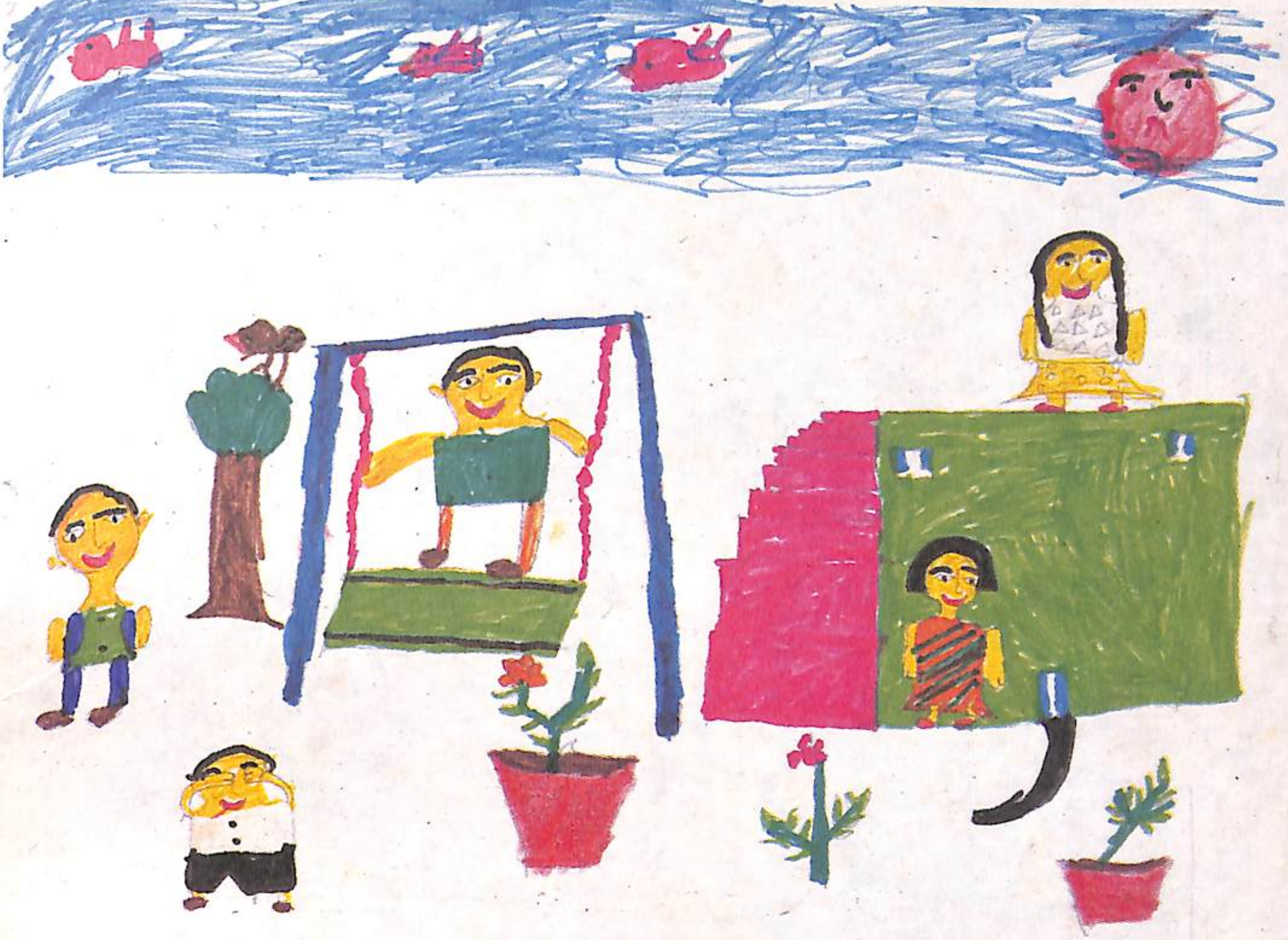
अचरज की बात नहीं कि इन परिवारों में जनकता पिता से नहीं, माता से निर्धारित की जाती थी। यूरोप में बच्चों के नाम में उनके पिता का अंतिम नाम जुड़ा होता था, लेकिन यहाँ वे अपनी माँ का नाम लेते थे। अगर पिता 'हिरन' क़बीले का होता और माँ 'रीछ' क़बीले की, तो बच्चे 'रीछ' क़बीले के ही होते थे। हर कुल में औरतें और उनके बच्चे, उनकी बेटियों के बच्चे और उनकी पोतियों और नातिनों के बच्चे होते थे।

यूरोपियों के लिए यह सब बड़ा चकराने वाला था।

तब तक वे इस बात को पूरी तरह भूल चुके थे कि धनुषों और बाणों के ज़माने में, पहली डोंगियों और कुदालों के ज़माने में उनके अपने पूर्वजों के भी यही रिवाज थे।



(अगले अंक में जारी)
'मनुष्य महाबली कैसे बना' से साभार।
प्रस्तुति : राजेश उत्साही



शिल्पा झा, पहली, लखनऊ, उ.प्र.



रामप्रकाश साहू, बारह वर्ष, चम्पारण, रायपुर, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/ 95



अराना देवार, छटवीं, नेवरा, रायपुर, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना